SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 5
October-2021, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका
अक्तूबर-2021 रू.5/-

११-१०-२०२१
सोमवार
रात - गरुडवाहन

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

०७-१०-२०२१
गुरुवार
दिन
ध्वजारोहण

०७-१०-२०२१
गुरुवार
रात - महाशेषवाहन

०८-१०-२०२१
शुक्रवार
दिन - लघुशेषवाहन

संजय उवाच -

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-२४)

सञ्जय ने कहा - हे धृतराष्ट्र! अर्जुन द्वारा इस प्रकार कहे वाक्य सुन कर महाराज श्रीकृष्णचन्द्र ने दोनों सेनाओं के बीच में खडा है।

इदं शास्त्रं मया प्रोक्तं गुह्य वेदार्थदर्पणम् ।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा सगच्छेद्विष्णु शाश्वतम् ॥

(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव)

''मेरे द्वारा प्रस्तुत यह गीता शास्त्र गोपनीय वेदार्थों को दर्पण की भांति प्रतिबिंबित कर रहा है। जो प्रयत्न कर इसका पठन करेगा वह शाश्वत रूप से विष्णुपद प्राप्त करेगा।''

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५२ अक्तूबर-२०२१ अंक-०५

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

विषयसूची

ब्रह्मोत्सव एवं वाहन सेवाएँ	डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु	07
विध्या स्वरूपिणी - वाग्देवी	श्रीमती एस.पी.वरलक्ष्मी	12
श्रीहरि के कल्याणोत्सव	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	15
ब्रह्मोत्सव की गरिमा	डॉ.के.सुधाकर राव	18
भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) का नैवेद्य	डॉ.जी.मोहन नायुडु	20
श्री बालाजी के भक्तों की सेवा में ''श्रीवारि सेवक''	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	23
जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	31
शक्तिरूपा माँ दुर्गा	श्री अंकुश्री	35
श्री वेंकटेश्वर के पदकार अन्नमाचार्य	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	37
तिरुमल में अन्नप्रसाद	डॉ.बी.के.माधवी	41
शक्ति का महापर्व नवरात्र व विजयदशमी	श्रीमती रमन त्रिपाठी	43
वांछित फल प्रदायक कल्पवृक्षवाहन	डॉ.एन.दिव्या	49
चित्रकथा - गरुड वाहन	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	श्रीमती एन.मनोरमा	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - गरुडवाहन पर श्री मलयप्पस्वामी।
चौथा कवर पृष्ठ - चक्रस्नान।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

तिरुमलगिरियों में ब्रह्मोत्सव की शोभा

वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेश समोदेवो न भूतो न भविष्यति।।

वेदकाल से ही प्रसिद्ध वेंकटाचल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के आगमन से ज्यादा प्रसिद्ध होकर विश्वव्याप्त प्रचार पाया है। भक्तवत्सल, अलंकार प्रेमी, भोजन प्रिय, करुणासागर, कलियुग के अधिनायक श्री वेंकटेश्वर भगवान को साल भर में दिनोत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव तथा मासोत्सव एवं वार्षिक उत्सव भी संपन्न करते हैं। अर्चारूप में विराजित होकर श्री वेंकटेश्वर जी को नित्य कल्याण निलय श्रीनिवास को किये जानेवाले उत्सवों में 'ब्रह्मोत्सव' सर्वोत्कृष्ट उत्सव के स्थान पाया है। लोककल्याणार्थ चतुर्मुख ब्रह्म ने श्रीनिवास के आविर्भाव के दिनों को उत्सव के रूप में मनाया था। इनके द्वारा प्रारंभित उत्सव तभी से लेकर आज तक नित्यनूतन, रंगबिरंग-फूलों से अलंकृत होकर, विद्युत दीपों से सुसज्जित होकर नयनानंदकर कांति रेखा प्रसरित होकर वैभवोपेत ढंग से ब्रह्मोत्सव मनाया जा रहा हैं।

अनाथ रक्षक, आर्तत्राण परायण, गोविंदा... गोविंदा... ऐसा भगवान के नामोच्चारण करते हुए तिरुमल को अधिक संख्या में भक्त जन आनेवाला उत्सव भी 'ब्रह्मोत्सव' हैं। लेकिन तो आज-कल भौगोलिक परिस्थिति बहुत मुश्किल स्थिति में पडा है। कोविड-१९ के कारण से ब्रह्मोत्सव को एकांत रूप में संपन्न करने के लिए निर्णय लिया है। क्योंकि अधिक भीढ़ से ज्यादा समस्याएँ उत्पन्न होते हैं। इनके निवारण के लिए सामाजिक दूरी का पालन करते हुए विश्वव्यापी महम्मारी समस्या को दूरी हटाने के लिए हम सभी प्रार्थना करना है। और इनके निवारण चर्याओं के अंतर्गत तिरुमल में सुंदरकांडपारायण, वेदपारायण जैसे महोत्कृष्ट कार्यक्रम निरंतर चालू करते रहते हैं।

हाल ही में तिरुमल में ''नवनीत सेवा'' भी प्रप्रथम बार प्रारंभित किया है। इस सेवा में भी आगे भविष्यत काल में सभी भक्तगण भाग लेकर धन्य बन जाती है। ये सभी उत्सव देवताओं के लिए आनंदोत्सव है। भक्तों के लिए अनुशासन, सद्भक्ति भाव से संप्रदाय का पालन करते हुए सभी भक्त, इन ब्रह्मोत्सवों को सफल करने की सहयोग दें।

भगवान श्रीनिवास भक्तवत्सल है। भक्तों के मनौती को स्वीकारते हुए आशीर्वाद करते है। ऐसे स्वामी के हृदय में 'व्यूहलक्ष्मी' के नाम से 'महालक्ष्मी' विराजित है। इसलिए वे 'श्री'निवास हुए हैं। इसलिए तिरुमल में स्वामी को कोई अर्चना किये जायेंगे, तो उसके तुरंत बाद हृदयलक्ष्मी की अर्चना भी की जाती है। यह तिरुमल क्षेत्र में रहे संप्रदाय है। शरन्नवरात्रियों में स्वामीजी लक्ष्मीदेवी के साथ अभिन्न होकर रहे हुए वेंकटाचल क्षेत्र में एक ओर स्वामीजी और दूसरी ओर देवी माँ का अर्चना करने की फल हम प्राप्त कर लेंगे।

श्रियः कांताय कल्याण निधये निधयेऽर्थिनाम्।।
श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

ब्रह्मोत्सव एवं वाहन सेवाएँ

- डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु, मोबाइल - ९६४०२३३९३०

ब्रह्मोत्सवों का आयोजन अन्य समस्त उत्सवों के आयोजन के भिन्न होता है। ये वर्ष में एक बार दस दिनों तक आयोजित किये जाते हैं। तिरुमल इतिहास में ही इन्हें बड़ी ही विलक्षणता एवं वैभव प्राप्त है।

श्री वेंकटेश्वर कोई अन्य नहीं अपितु भक्तों पर कृपा करने केलिए सर्वोत्कृष्ठ स्थान श्री वैकुण्ठ त्यागकर भूलोक में अवतरित स्वयं श्री महाविष्णु ही है। भक्तों द्वारा दी जानेवाली अति साधारण भेंट स्वीकृत करके, उनके असाधारण पापों को भी दूर करते हैं। कहते हैं कि वे एक ही लेकर अनेकानेक वर प्रदान करते हैं। केवल इतना ही नहीं, वे अपने भक्तों को लाभान्वित करने हेतु ही उनके द्वारा 'कल्याणोत्सव' अपने लिए करवाते हैं। उत्सवों को आयोजित करवाते हैं। इस प्रकार शोभा-यात्राएँ, सेवाएँ एवं अन्य प्रकार के विशिष्ट आध्यात्मिक कार्यक्रम करवानेवाले, ''कलौ वेंकटनायकः'' (कलियुग में वेंकटेश्वर भगवान है।) रूप से सुविख्यात जगत्कल्याण साम्राट हैं 'तिरुमल-गोविंद।'

अंकुरार्पण

कोइल आल्वार तिरुमंजन (मंदिर की साफ-सफाई) कार्यक्रम के पश्चात् अंकुरार्पण कार्यक्रम होता है। ध्वजारोहण के पूर्व प्रतिदिन संध्या की वेला में भगवान के सेनाध्यक्ष श्री विष्वक्सेन जी मंदिर के नैरूति दिशा (South West) में

स्थित वसंत मण्डप, छत्र व चामर सहित, वाद्य यन्त्रों सहित जाकर (मंगलवाद्य) वहाँ भूमिपूजा इत्यादि करते हैं। फिर थोड़ी-सी मिट्टी लेते हैं। मंदिर की परिक्रमा की दिशा में आकर मंदिर-प्रवेश करते हैं। ठीक उसी रात ब्रह्मोत्सवों का नौ-धान्यों के साथ अंकुरारोपण (बीजवपन) होता है।

ध्वजारोहण

इसके अगले दिन ही प्रधान कार्यक्रम ध्वजारोहण आयोजित किया जाता है।

वैखानसागम शास्त्र के अनुसार गरुड केतन स्थापना, कंकण धारण, मंदिर परिसर में एवं बाहर चारों ओर आठों दिशाओं में 'बलि'-भोग चढ़ाते हुए भगवान जब श्रीदेवी-भूदेवी सहित, मंदिर-परिवार देवताओं के सहित शोभायात्रा कर निकलते समय, आठों-दिशाओं के पालक(शासक) आमंत्रित किये जाते हैं। इस प्रकार देवताओं को आमंत्रित करने के पश्चात् भगवान मंदिर में प्रवेश करके ध्वज-स्तंभ के निकट पहुँचते हैं। शेष परिवार के देवता यानि अनंत, गरुड, विष्वक्सेन, सुग्रीव, हनुमान एवं अंगद इत्यादि विमान प्रदक्षिण में स्थित मंडप पहुँचते हैं।

तत्पश्चात् श्रीदेवी-भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी के समक्ष वेद पाठ के बीच बाजे, बजते समय पुजारी स्वर्णिम ध्वजस्तम्भ पर गरुड-ध्वज फेहराते हैं। इस अवसर पर मुद्गल चावल का (मूँगदाल युक्त चावल) भोग लगाया जाता है। लोगों की धारणा है कि यदि इस प्रसाद को खाएं तो बांझ भी माँ बनती हैं। उन्हें सत्संतान प्राप्त होती है।

इसके उपरान्त भगवान को उनकी पटरानियों सहित उसी रात से शोभायात्रा पर ले चलते हैं। प्रतिदिन सुबह, शाम, एक-एक वाहन पर उत्सव बड़े धूम-धाम से नौ दिनों तक शोभायात्रा निकालते हैं।

महा(बड़ा)शेषवाहन

अंकुरार्पण से साम्प्रदायिक पद्धति में श्रीगणेश किये गये ब्रह्मोत्सवों में प्रथम आकर्षण है ''विष्वक्सेन की शोभायात्रा''। भगवान विष्णु के सर्वसेनाधिपति है विष्वक्सेन। उनकी शोभायात्रा से प्रारंभ किये गये ये तिरु(श्री)वीथिउत्सव, शेषनाग के पहले वाहन से पहले दिन-रात के समय बहुत ही आकर्षक व प्रभावोत्पादक दृष्टिगोचर होते हैं। शेषनाग(आदिशेष) श्रीहरि के अत्यन्त प्रिय दास हैं। रामावतार में लक्ष्मण के रूप में, द्वापर में (कृष्णावतार के समय) बलराम (दाऊ) के रूप में, श्रीमन्नारायण के अंतरंग भ्राता के रूप में रहनेवाले शेष ही थे। श्री वैकुण्ठ के नित्यसूरियों में ये ही प्रप्रथम थे। धरती का भार ये ही ढ़ोते हैं। प्रत्येक मनुष्य-शरीर के निर्माण में मूलाधार से लेकर सहस्रार कर्णिका तक सात चक्र रहते हैं। वे हैं - मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा एवं सहस्रार। मूलाधार से लेकर-सहस्त्रार तक ब्रह्मदण्ड के बीच में से (रीढ़ की हड्डी के बीच में से) 'कुण्डलिनी-शक्ति' नामक सुषुम्ना नस (नाडी) सर्पाकार में रहता है। साधारण मनुष्य की मानसिक प्रवृत्तियाँ लौकिक विषयों की तरफ उन्मुख रहती हैं। ऐसी स्थिति में सर्पाकार में रहनेवाली कुण्डलिनी शक्ति शिर के मूलाधार में विद्यमान रहती है एवं पूँछ सहस्त्रार में। ब्रह्मोत्सवों में प्रथम दिन श्री-भूदेवियों सहित श्री वेंकटेश भगवान को धारण करते हुए वे हमें दर्शन दे रहे हैं। पटरानी-द्वय के साथ सात फनोंवाले स्वर्ण शेष पर स्वामी प्रसन्न मुख से दिखायी पडते हैं। अभी कोविड-१९ के कारण सारे वाहन सेवाएँ एकांत में संपन्न करते हैं।

लघु(छोटा)शेषवाहन

ब्रह्मोत्सवों में दूसरे दिन मलयप्पस्वामी (बालाजी) पाँच सिरवाले लघु(छोटा)शेषवाहन पर अपना दर्शन दे रहा है।

श्रीमद्भगवद्गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था-

''अनंतश्चास्मि नागानां

सर्पाणामस्मि वासुकिः''

(''नाग जाति में मैं अनंत हूँ एवं सर्पजाति में मैं वासुकी हूँ।'')

अतः बृहत् (बडे)शेषवाहन को आदिशेष (शेषनाग) एवं छोटे शेषवाहन को 'वासुकी' मान सकते हैं।

जो भी भक्त भगवान श्रीनिवास को छोटेशेषनाग पर विराजमान देखता है उसकी भावनाएँ एवं उसके संकल्प सभी भगवान श्रीनिवास के अधीन हो जाते हैं।

हंसवाहन

ब्रह्मोत्सवों में दूसरा दिन, रात के समय मलयप्पाजी (बालाजी श्री वेंकटेश की उत्सवमूर्ति) वीणाधारी होकर माता सरस्वती के रूप में दर्शन देते हैं।

'हंस' शब्द के अर्थ अनेक हैं। एक तो वह पक्षी है। जो विधाता ब्रह्म का वाहन है। जो महात्मा परमात्मा में सदा लीन होकर रहता है उसे 'हंस' या 'परमहंस' कहते हैं। निरन्तर गतिशील सूर्य को भी 'हंस' कहते हैं। भगवान ऐसे हंस पर आसीन होकर शोभायात्रा पर निकलना हर्ष का विषय ही है।

हंसवाहन पर आसीन होकर चलनेवाले श्री बालाजी सूर्यमंडल में विद्यमान श्रीमन्नारायण का प्रतीक है। हंस में एक विलक्षण शक्ति है। वह क्षीर-नीर (दूध और पानी) को अलग-अलग कर सकता है। यदि हम जल से युक्त दुग्ध को उसके समक्ष रखें तो वह केवल दुग्ध(दूध) ग्रहण करके जल को त्याग देता है। यह तो आत्मा-अनात्मा विवेक का द्योतक है। विवेकी व्यक्ति अनात्मावस्तुओं यानि स्थूल व सूक्ष्म शरीर त्याग कर आत्मा को स्वीकृत करता है।

सिंहवाहन

ब्रह्मोत्सवों में तीसरे दिन प्रातः ही भगवान सिंहवाहन पर आसीन होकर हमें दर्शन देते हैं। स्तोत्र वांग्मय कहता है कि अनंत तेज युक्त श्रीनिवास जी राक्षसों को दहाडनेवाला शेर-सा दृश्यमान होता है।

'मृगाणांच मृगेन्द्रोहम्'- गीताचार्य भगवान श्रीकृष्ण स्वयं के बारे में सूचित करता है। अर्थात् ''मैं समस्त पशुओं में सिंह हूँ।'' श्री विष्णु सहस्रनामों में 'स्वामी' का एकनाम ''सिंहः'' है! इस कारण सारी सृष्टि में सिंह अन्य प्राणियों की तुलना में विशिष्ट है। भगवान विष्णु के अवतारों में चौथा अवतार नरसिंह भगवान का है।

मुक्तावितान (मोतियों का पंडाल) वाहन

ब्रह्मोत्सवों में तीसरे दिन रात के समय मुक्ता-वितान वाहन पर सप्तगिरीश बालाजी प्रत्यक्ष होते हैं। मोती मूल्यवान हैं। वे शीतलता प्रदान करते हैं एवं समुज्वल ध्वज कान्ति से शोभित हैं। ज्योतिष शास्त्र चन्द्रमा के प्रतीक के रूप में मोतियों की प्रशंसा करता है। समुद्र द्वारा हमें प्राप्त उत्कृष्ट वस्तुओं में से मुक्ता (मोती) एक है। स्वाति कार्ते में बूँदें गिर कर सागर की सीपियों में गिरतीं एवं मोती बनती हैं। लोग इनकी (मोतियों की) माला बनाकर धारण करते हैं।

कल्पवृक्षवाहन

प्रकृति की शोभा बढ़ानेवाला है वृक्ष। इस संसार में हमें अनेकानेक प्रकार के वृक्ष दिखाई देते हैं जिनमें सर्वोत्कृष्ट वृक्ष है- 'कल्पवृक्ष', अन्य सारे वृक्ष उन पर लगनेवाले फल ही देते हैं जबकि कल्पवृक्ष समस्त वांछित फल प्रदान करता है। भगवान श्रीनिवास इस प्रकार के कल्पवृक्ष पर आरूढ होकर चौथे दिन सुबह तिरुमाडावीथियों में भक्तों को भर पूर दर्शन देते हैं।

सर्वभूपालवाहन

ब्रह्मोत्सवों के चौथे में रात के समय भगवान मलयप्पस्वामी सर्वभूपालवाहन पर विराजमान होकर शोभायात्रा के लिए निकल पडते हैं। आदिदेव एवं देवाधिदेव श्रीहरि का राजाधिराज बनने में कोई आश्चर्य नहीं। इसी कारण श्रुति ने ''राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने'' कहकर वर्णन किया है। भूपाल से मतलब राजालोग हैं। सर्वभूपाल से तात्पर्य समस्त शासक। 'राजा प्रजारंजनात्' से हमें पता चलता है कि प्रजा का हित करनेवाला उनका अनुरंजन करनेवाला ही सही 'राजा'-महीराजा है।

मोहिनी अवतार

ब्रह्मोत्सवों के पाँचवे दिन प्रातः ही दयानिधान, कृपासागर एवं आर्त रक्षक बालाजी मोहिनी रूप धारण करके श्रृंगार रस देवता-सा दर्शन देता है। बगल में वे ही

कृष्ण-कन्हैय्या के रूप में हाथी-दाँत की डोली पर विराजमान होकर मंदिर से बाहर आते हैं।

मनमोहक श्रीकांत का स्वरूप अद्भुत एवं बड़ा ही लुभावना होता है। 'पुंसां- मोहन रूपाय...' नामक उक्ति को सार्थक करते हुए श्रीमहाविष्णु जिस किसी भी रूप में हो, पुरुषों को भी सम्मोहित करता है। और तो और मोहिन रूप में है न! फिर कहना क्या? 'अतृप्त अमृत रूपाय वेंकटेशाय-मंगळम्' कहते हुए भक्त हर कदम पर भगवान की आरती उतारते हैं।

गरुडवाहन

भगवान श्रीहरि गरुड पर आसीन होकर ही अपनी यात्रा करता है। इस कारण उत्सवों में से अन्य उत्सवों की तुलना में गरुडोत्सव का अपना महत्व एवं समीचीनता भी है। पाँचवें दिन की रात तिरुमलेश की यह सेवा होती है। गरुडजी केवल वाहन के रूप में ही नहीं बल्कि ध्वजारोहण के दिन ध्वजमण्डप पर खड़े होकर तीन करोड़ देवी-देवताओं को ब्रह्मोत्सवों में आमंत्रित करता है। उत्सव जब तक होते हैं तब तक वह मंदिर परिसरों की निगराती करता है, इस क्षेत्र का पर्यवेक्षण भी करता है। नौंवे दिन शाम को ब्रह्मोत्सव की समाप्ति गरुडध्वजावरोहण नामक प्रक्रिया से होती है। इसी प्रकार श्रीविल्लिपुत्तूर देवस्थान से आनेवाली तुलसी-मालाएँ एवं चेन्नै से विराट छतरियाँ गरुड सेवा के दिन ही समर्पित की जाती हैं।

हनुमद्वाहन

छठे दिन सुबह ब्रह्मोत्सवों में वरदहस्तवाले वेंकटाद्रिराम हनुमद्वाहन पर विराजमान होकर शोभायात्रा पर निकलते हैं। हनुमान जी भगवद्भक्तों में अग्रणी हैं। रामायण में मारुति का स्थान अनुपम है, चारों-वेदों में निष्णात, नवव्याकरण पंडित एवं लंकाभयंकर सुप्रसिद्ध बजरंगबली हनुमान वेंकटाद्रिवासी को अपने कंधों पर चढ़ाकर तिरु(पवित्र)वीथियों में चलते हुए दर्शन देना भक्तों को अत्यंत प्रसन्न कर देता है। हनुमान चिरंजीवी है। हनुमान जी अपने प्रिय भक्तों को आत्मोन्नति प्रदान करता है।

स्वर्णरथोत्सव

छठे दिन के सायं आयोजित स्वर्णरथोत्सव एक विशिष्ट प्रकार का उत्सव है। स्वर्णरथ भगवान श्रीनिवास के लिए अत्यन्त प्रीतिपात्र है। स्वर्णिम रथ में मलयप्पा श्री-भूदेवियों के साथ हमें दर्शन देते हैं। इस स्वर्णरथोत्सव में भी अन्य वाहनों की तरह ही यानि उनके आगे जानेवाले ब्रह्मशून्य रथ, गज, अश्व, वृषभ इत्यादि चलते हैं।

इस स्वर्णरथोत्सव सेवा में कल्याणकट्टा सेवक एक स्वर्ण छतरी का सबसे पहले अलंकृत करते है जो एक रिवाज है।

गजवाहन

ब्रह्मोत्सवों में छठवें दिन गजवाहन पर प्रभु श्रीनिवास बालाजी भक्तों के नेत्रों को आनंद प्रदान करते हैं। गज (हाथी) अनादिकाल से ही वाहन के रूप में प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में युद्धों में रथों, गजों व अश्वों को वाहनों के रूप में प्रयोग में लाते थे।

भगवान बालाजी का गजवाहन पर आरूढ़ होकर तिरुमाडावीथियों में चलना भक्तों केलिए एक अविस्मरणीय दृश्य है। केवल स्वामी द्वारा गजवाहन पर आरूढ़ होने के दिन ही नहीं बल्कि प्रतिदिन ब्रह्मोत्सवों के दौरान वाहन-सेवा के समय तिरुमल तिरुपति देवस्थान के गजराज भी भाग लेते हैं।

सूर्यप्रभावाहन

ब्रह्मोत्सवों में सातवाँ प्रातः श्रीहरि बालाजी सूर्यप्रभावाहन पर आसीन होकर दर्शन देते हैं। सूर्य तेजोनिधि एवं समस्त रोगों के निवारक हैं। प्रकृति में चैतन्य भरता है। वर्षा, उनके द्वारा बढ़नेवाले धान इत्यादि, चंद्रमा एवं उनके द्वारा बढ़नेवाली ओषधियाँ इत्यादि सभी सूर्य की ओज और तेज द्वारा ही, समुज्वल हैं। ऐसी सूर्यप्रभा पर आरूढ़ होकर स्वामी बालाजी कलियुग वैकुण्ठ के रूप में सुविख्यात तिरुमल में शोभायात्रा पर निकलना हर्षदायक एवं समीचीन भी है।

चन्द्रप्रभावाहन

ब्रह्मोत्सवों के सातवें दिन रात के समय भगवान बालाजी की वाहन सेवा चन्द्रप्रभा द्वारा होती है। सूर्य-चन्द्र भगवान के दो नेत्र हैं। आज उदय सूर्यप्रभा पर निकल कर पुनः रात के समय निशापति चन्द्र की प्रभा से शोभायात्रा पर निकलना अत्यन्त समुचित है। चन्द्रमा और कोई नहीं, भगवान का प्रतिरूप ही है।

रथोत्सव

रथोत्सव का ब्रह्मोत्सवों के आठवें दिन होता है। अपनी दोनों दिव्य पटरानियाँ (देवेरियों) सहित मलयप्पा (भगवान बालाजी वेंकटेश) महोन्नत रथ पर विराजमान होकर आसीन होकर माडावीथियों में शोभायात्रा पर देखते हैं। वस्तुतः यह एक बहाना है। भगवान मंदिर में विभिन्न कारणों से न आ पाने वाले व अशक्त भक्तों पर वात्सल्य की अधिकता के कारण, स्वयं उत्सवमूर्ति के रूप में दिव्य पत्नियों समेत पधारते हैं। यह एक अद्भुत दृश्य है।

अश्ववाहन

ब्रह्मोत्सवों के आठवें दिन रात के समय सप्तगिरीश्वर तिरुमल की तिरुमाडावीथियों में अश्व पर आसीन होकर विहरण करते हैं। समस्त पशुओं की तुलना में वह (घोड़ा) अत्यंत वेग से दौडता है। वर्तमान परिवहन सुविधाओं के प्रचलन से पूर्व मनुष्य का प्रधान वाहन घोड़ा ही था। युद्धों में तो अश्वों के दल विशेषतः रहते थे।

भगवान विष्णु के १० अवतार सुविख्यात हैं। उनमें से अंतिम अवतार है कल्कि अवतार। पुराणों का कहना है कि कलियुगांत में भगवान कल्कि रूप धारण करके, हाथ में तलवार लेकर कुजनों, लोक कंटकों का संहार करते हैं।

चक्रस्नान

भगवान बालाजी के ब्रह्मोत्सवों का अन्तिम पवित्र कार्यक्रम चक्रस्नान है। यह यज्ञांत में किया जानेवाला अवभृत ही है। यज्ञ (हवन) के अंत में अवभृतस्नान करना एक प्राचीन संप्रदाय (परंपरा) है। नौ दिन एक दिव्य यज्ञ के रूप में ब्रह्मोत्सव आयोजित किये गये एवं लाखों श्राद्धालु भक्तों ने इसमें भाग लिया है। केवल प्रत्यक्ष रूप में ही नहीं परोक्षतः दूरदर्शन द्वारा वीक्षण करनेवाले एवं आकाशवाणी द्वारा श्रवण करनेवाले करोड़ों भक्तजन भी कृतार्थ हो जाते हैं धन्य हो जाते हैं। इस कारण यज्ञ-समापन का अत्यन्त महत्व है।

विध्या स्वरूपिणी वाग्देवी

- श्रीमती एस.पी.वरलक्ष्मी
मोबाइल - ८६४४२२८०८५

विध्या ही हर एक के संपूर्ण जीवन सिद्धि के लिए मूलाधार है। कवि, लेखक, गीताचार्य, पाठक, आलोचक, गायक, तार्किक, सर्व प्रथम अध्यापक, समीक्षक, संगीतज्ञ, प्रवक्ता, ज्योतिष्कर्ता, उपदेशक एवं वक्ता सभी लोगों को सरस्वती देवी की कृपा तदार्थ विध्या अत्यंतावश्यक है। अच्छी शिक्षा, वाक्पटुता, वाक्वैदिग्धता, वाक्चतुरता अपनी वाणी के द्वारा ही दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। संगीत, साहित्य अन्य ललितकलाओं की अधिष्ठान देवता वीणा पुस्तक धारिणी है। यह दैव वाणी है एवं सर्व मान्य है। वाणी की प्रसन्नता केलिए चित्त शुद्धि, पवित्र, निर्मल श्रद्धा से आराधना करना चाहिये। तत्पश्चात् वाग्देवी प्रसन्न होकर अपनी ऐच्छिक विध्याओं को प्रदान करती है। सरस्वती देवी सकल विध्यास्वरूपिणी मानी जाती है। संपूर्ण वांग्मय साहित्य की आधार शक्ति है। वह हमारे मनोपटल पर अंतर्वाहिनी के रूप में स्थित होने से ही हमारी मेधा शक्ति की श्रीवृद्धि होती रहती है। वाणी की कृपा न रहे तो हमारे जीवन अज्ञानांधकार में डूबे रहते हैं। इसीलिये सरस्वती देवी की कृपा सब केलिए अनिवार्य है।

श्लो : ''या कुंदेंदु तुषार हार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणा वरदंड मंडितकरा या श्वेत पद्मासना या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृति भिर्देवैः सदा वंदिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।'' यह सरस्वती देवी की स्तुति है। माँ सरस्वती की पूजा करने से बौध्दिक विकास होकर सकल शुभ संप्राप्त होते हैं। वाक्, बुद्धि, विध्या, ज्ञानार्जन, भाषा एवं लिपि के लिए अधिष्ठान देवता सरस्वती ही है। सरस्वती शब्द का दूसरा अर्थ प्रवाहित होनेवाली नदी ही।

सरस्वती शब्द

''सरोविविधम ज्ञानं विद्यते
यस्यां चित्तो सा सरस्वती''

भावार्थ : जिस व्यक्ति को विविध-विज्ञान अर्थात शब्द, अर्थ संबंध प्रयोग का ज्ञान यथावत होता है। अतः उस परमेश्वरी का नाम सरस्वती है।

माँ सरस्वती वीणा पुस्तक धारिणी, शुद्ध सत्व स्वरूपिणी, हंसवाहिनी, वह ब्रह्म के रसनाग्र निवासिनी है। मीठे मृदु मधुर के वचनों की स्वर्णिम माता है। सरस्वती वेदों की जनइत्री है। सफेद वस्त्र धारिणी, वीणा-पुस्तक हस्तभूषणी, रत्नाभरण गले में धारण करके सकल शास्त्रों की अधिदेवता

सरस्वती है। उसकी कृपा मात्र से मूर्ख भी पंडित बन जायेगा जो सरस्वती के बारे में अपमान करता है वह चाहे महापंडित क्यों न हो ज्ञान भ्रष्ट, विवेक शून्य होकर सर्वस्व गंवाता है। अंत में पागल बन जाता है। इसी पवित्र उद्देश से उस सरस्वती माँ की करुणाकटाक्ष केलिए प्रार्थना करें। 'सरस्वती देवी का मूल मंत्र - ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नमः।'

सरस्वती व्रत

धनाधिनेत्री लक्ष्मी देवी को वरलक्ष्मी व्रत की भांति विध्याधि नेत्री सरस्वती का भी एक व्रत है। इस व्रत करने से अज्ञान से किये हुए सारे पाप हट कर ज्ञान प्राप्त होता है। उस व्रत का विधान निम्नांकित है।

सरस्वती व्रत केलिए माघ शुद्ध पंचमी या किसी मास का शुक्लपंचमी - पूर्णिमा तिथि श्रेष्ट हैं। प्रातः शुभ मुहूर्त में सरस्वती की पूजा करने का संकल्प करें। स्नानादिक दैनंदिन कार्यक्रमों के बाद कलश स्थापना करना चाहिये। गणपति की पूजा करने के बाद कलश में देवी का आवाहन करना चाहिये। विध्यादायिनी सरस्वती को वस्त्र समर्पण करके आभूषण सजाना है। सफेद फूल, सुगंध चंदन से एवं अक्षतों से ध्यान वाहनादि षोडशोपचारों से पूजा करने के बाद (परमान्न) गुड युक्ति दूध अन्न को निवेदन करना चाहिये। पूजा संपूर्ण के बाद कथा कह कर अक्षताओं को सिर पर धारण करके परमान्न प्रसाद को सब को बांट देना चाहिये। इस प्रकार पांच सप्ताह तक करने के बाद उद्यापन करना है।

उद्यापन विधान

पांच बच्चों को गणपति के प्रतिरूप भावना करके पूजा कर नये वस्त्र देकर तख्ती व खडिया, पुस्तक, कलम देकर एक साल तक उनको पढाना हैं अगर ऐसा न हो तो उनकी पढाई का आर्थिक भार संभालना है। किसी को भी, अपने लोगों केलिए पढाई केलिए उन्नत विध्या या पदोन्नति, चाहे तो इस व्रत का आचरण करके सत्फल पा सकते हैं। इस व्रत का आचरण करने के लिए श्रावण महीना या माघ-फाल्गुन शुभप्रद हैं।

सरस्वती का आविर्भूत दिन माघ शुद्ध पंचमी या श्रीपंचमी अच्छे पर्व माने गये हैं। उस दिन सरस्वती को पुस्तकादि रूप या मूर्ती के रूप में आवाहन करके पूजा करना अच्छा माना गया है। विशेष अर्चना, पूजा, व्रतोत्सव करने से उसकी कृपा प्राप्त होती है। यह निर्विवाद है।

सरस्वती के लिए प्रीतिपूर्ण नैवेध्य

मक्खन, दही, दूध, अनाज या तिल से बनाये गोल, गुड, मधु, मीठे गन्ने के टुकडे, सफेद अनाज,

सफेद चावल भात, सफेद लड्डू, चावल-गेहूँ से बनाये घी के पकवान, केले, घी का परमान्न, नारियल, नारियल का पानी, बेर का फल आदि...

सरस्वती देवी के मंदिर

तेलंगाणा राज्य में आदिलाबाद जिले के 'बासरा' में 'ज्ञान सरस्वती देवी' का मंदिर सुप्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र है। स्थल पुराण की वाणी है कि यह वेदव्यास महर्षि से प्रतिष्ठित है। केवल सरस्वती के जन्म दिन ही नहीं वसंत पंचमी बल्कि साल भर अक्षराभ्यास होते ही रहते हैं। सिद्धिपेटा जिला (तेलंगाणा) के वर्गल में, अनंत सागर (तेलंगाणा) अन्य क्षेत्रों में भी सुप्रसिद्ध सरस्वती मंदिर हैं।

आं.प्र., कर्नूल जिले के नल्लमलै पहाडों के आत्मकूर से २१ कि.मी. दूर में ''कोलनु भारती'' के नाम पर प्राचीन सरस्वती मंदिर सुप्रसिद्ध है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेजिए-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

श्रीहरि के कल्याणोत्सव

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी , मोबाइल - ९९४९८७२१४९

भारत के सबसे चमत्कारिक मंदिरों में से एक है तिरुपति बालाजी। यह आंध्रप्रदेश के चित्तूर में स्थित है। प्राचीन कथा के अनुसार एक बार महर्षि भृगु वैकुंठ पधारे और आते ही शेष शय्या पर योगनिद्रा में हुए भगवान विष्णु छाती पर एक लात मारी, भगवान विष्णु ने तुरंत भृगु के चरण पकड़ लिए और पूछने लगे कि ऋषिवर पैर में चोट तो नहीं लगी। भगवान विष्णु का इतना कहना था कि भृगु ऋषि ने दोनों हाथ जोड़ लिए और उन्होंने अपनी गलती स्वीकार कर ली। नाराजगी में देवी लक्ष्मी वैकुण्ठ छोड़कर चली गयी। भगवान विष्णु ने देवी लक्ष्मी को ढूंढना शुरू किया तो पता चला कि देवी ने पृथ्वी पर पद्मावती नाम की कन्या के रूप में जन्म लिया है। भगवान विष्णु ने भी तब अपना रूप बदला और पहुँच गए पद्मावती के पास। भगवान ने पद्मावती के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे देवी ने स्वीकार कर लिया लेकिन प्रश्न सामने यह आया कि विवाह के लिए धन कहाँ से आएगा। विष्णुजी ने समस्या का समाधान निकालने के लिए भगवान शिव और ब्रह्माजी को साक्षी रख कर कुबेर से काफी धन कर्ज लिया। इस कर्ज से भगवान विष्णु के वेंकटेश रूप और देवी लक्ष्मी के अंश पद्मावती ने विवाह किया। लोग इस मंदिर में आकर शादी इसलिए करते हैं जिससे वह जन्मों जन्म साथ रह सकें। हर दिन, स्वामी का मंदिर सदा बाहर हरियाली और शादी के आकर्षण से सुशोभित होता है। उत्सवों को प्राप्त करने वाली मूर्तियों को उत्सवमूर्ति कहा जाता है। इस स्वामी का एक अनूठा नाम है। उसका नाम 'मलयप्पस्वामी' है। इनमें से सबसे उल्लेखनीय दैनिक 'कल्याणोत्सवम' है। श्री श्रीनिवास के अवतार पद्मावती कल्याणमूर्ति के रूप में विश्व प्रसिद्ध हो गए क्योंकि उन्हें कल्याण से लाभ हुआ था। वे अपने बच्चों की विवाह की कामना करते है और प्रभु के विवाह का जश्न मनाते है। आज श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल के गठन के बाद दुनिया भर में हर घर में इस कल्याण उत्सव का 'दर्शनम्' हो रहा है। वैदिक वैष्णव दृष्टिकोण के साथ उग्र दीक्षा, महासंकल्पम्, दीक्षाकंकनधारण, तेरपट्टम, कन्यादानम्,

मंगलसूत्रधारण, लाजहोमदुलु और अंत में अक्षतारोपन। बीच में गोदादेवी द्वारा लिखा गया एक पाशुर है जिसे 'वारणमायिरम्' कहा जाता है, जो गोदादेवी के श्रीरंगनाथस्वामी से विवाह करने के अवसर को इंगित करता है।

वैदिक धर्म हमारा है। यह धर्म त्रिमूर्ति के तरीके से धर्मार्थ जीवन से संबंधित है। इस जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात वैवाहिक गुण है। श्रीहरि के कल्याणोत्सवम् इन दोनों गुणों की शिक्षा देता है। इसलिए श्रीहरि मंदिर में एक नियम है कि पति-पत्नी को एक साथ स्वामी की सेवा करनी चाहिए। इसलिए सेवादारों को 'साझेदार' कहा जाता है। हमें यह समझने की जरूरत है कि इस त्योहार के माध्यम से श्रीहरि देवेरियों के साथ एक मजबूत हिंदू कल्याणकारी संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। इतना ही नहीं श्रीस्वामी सुबह से ही मालिक हैं संस्कार करनेवाले पुरोहित मंत्रों को उचित श्रद्धांजलि दी जाती है। सुबह के समय श्रीहरि पक्ष के पूजारी फल के दक्षिणी भाग और तांडुल (चावल) का दान करते हैं। अर्चक स्वामी ने दान स्वीकार करते है और ''नित्यैश्वर्यो भव'' का जाप करते हुए श्रीस्वामी को नमन करता है।

साथ ही कल्याणोत्सव और अन्य दरबारों के दौरान, स्वामी की ओर से 'फलतांबुल' के दक्षिणी रूप में पुजारी शिष्टाचार दिया जाता है। यह गुरु का गुण है जिसे गुरु बनाए रखता है। हम संबंधित सेवाएँ प्रदान करते हैं।

प्राचीन काल में विष्णुचित्त ने अपने पुत्रि गोदादेवी को श्रीरंगनाथ को उनके ससुर द्वारा 'पल्लंडु पल्लंडु पल्लाई ऋतंडु पालुकोडीरम' के रूप में आशीर्वाद दिया था। स्वामी! हमारे मंगलाशासन का अर्थ है कि आप कई करोड़ और सैकडों वर्षों तक ऐसे ही चमकते रहे। यह सच है कि अन्नमाचार्य ने भी श्रीहरि के कल्याणोत्सव की शुरुआत स्वयं देवी माँ की ओर से ''पुट्टिंटि'' शिष्टाचार चलाकर की थी, इतिहास बता रहा है।

इस संदर्भ में, परमात्मा को पहचानना ही, काफी है कि 'श्रीवारियात्रा-क्षेत्रनिवासम्-दर्शनम्'' सेवा स्वामी के साथ 'रिश्तेदारी' की खेती करने के बारे में है। हमें स्वामी के पास कमाने नहीं आना चाहिए। जो कुछ हमारे पास है, उसे बालाजी को बताने केलिए हमें आना चाहिए। 'कल्याणम' से जुड़े वसंतोत्सवम्, डोलोत्सवम्, ऊँजल सेवा, पल्लकी जुलूस, एकांत सेवा आदि सभी नवविवाहितों के सौजन्य से हैं। यही कारण है कि जगद्भारत श्रीनिवासन के लिए श्रीहरि नामक सार्थक रूप से तय किया गया था।श्रीहरि के नित्यकल्याणोत्सव दोपहर १२ बजे अभिजित लग्नम में शुरू होता है। कैंकर्य वैखानस पुजारी ७३ श्रीवरकाशी के घर से पीले धोवती पहने और बृहस्पति के रूप में अभिनय करने वाले एक अन्य पुजारी सहित

'वोची' मंडप प्रवेश द्वार की सहायता से और श्रीहरि पादसेवा करते हैं। उत्सव की शुरुआत सामूहिक प्रार्थना से होती है। अगला क्रम वैदिक अनुष्ठान है जैसे विष्वक्सेन पूजा, जप, साधनांकुरार्पण, रक्षाबंधन और अग्नि प्रतिष्ठा। बाद में मधुपर्क स्वामी को समर्पित करता है, पैर धोना, रचना की जाती है और स्वामी देवेरियाँ जादुई रूप से बंद हो जाती है। अगली श्रीहरि और देवेरियों के लिए नई पोशाकें भेंट की जाएँगी। महासंकल्प, श्रीहरि और देवेरियों का जप सद्भाव में किया जाता है।

बाद में मंगलाराधन किया जाता है और श्रीहरि के हाथों पर स्पर्श किए गए मंगलसूत्रों को देवेरियों पर पहना जाता है और 'कर्पूर नीराजनम्' अर्पित किया जाता है। पुजारी होमगुंडम में प्रधान होम, लाज होम, पूर्णाहुति और रक्षतिलकधारण के अनुष्ठानों को पूरा करते हैं। उसके तुरंत बाद 'वारणमायिरम्' किया जाता है। एक ओर श्रीहरि, देवेरियों के उत्सव के रूप में माला बदलने का कार्यक्रम वैज्ञानिक रूप से आयोजित किया जाता है। माताओं को स्वामी के पास लाया जाता है और 'अक्षतारोपणम्' नामक तलंबरों का प्रदर्शन किया जाता है। श्रीहरि को महानिवेदन और कर्पूर आरती अर्पित करने के साथ नित्य कल्याणोत्सव का समापन होता है।

कल्याणोत्सवफलम

''यवं यः कुरुथे भक्त्या तस्य पापं तत् क्षणादेव नश्यति, दशपूर्वेषाम्, दशापरेषाम्, आत्मानं च एकविंशतितमम् विष्णुः परम पदं गच्छन्ति ये स्त्री सुवासिनी जन्मसफल्यता च!!'' जो कोई भी विवाह समारोह के दौरान देवताओं सहित भगवान की पूजा करता है, उस समय उनके पापों को दूर कर दिया जाएगा, और उससे पहले की दस पीढ़ियों और उसके बाद की दस पीढ़ियों को भी पापों और नरक से मुक्त किया जाएगा और विष्णु के वचन तक पहुँच जाएगा। और सभी महिलाएँ शाश्वत सुगंध (मांगल्य भाग्य) पर पलती हैं।

कल्याणोत्सव में भाग लेन वाले भक्तों को देवेरियों के साथ श्रीहरि के आशीर्वाद से बुद्धि सफलता, साहस, स्वास्थ्य, प्रसिद्धि, वित्तीय लाभ और प्रजननक्षमता प्राप्त होगी।

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्!।
मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम्!।
श्रीपद्मावती समेतश्री श्रीनिवास परब्रह्मणे नमः।

ब्रह्मोत्सव की गरिमा

डॉ.क़े सुधाकर राव, मोबाइल - ८३२८२ २०३६५

हर वर्ष श्री वेंकटेश की धरातली तिरुपति में ब्रह्मोत्सवों का आयोजन होता है। ब्रह्मोत्सव से संबंधित विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालने से पहले, पूरी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

'ब्रह्म' शब्द सरस्वती के पति चतुर्मुख ब्रह्म हो सूचित करता है। सर्वप्रथम ब्रह्म ने ही सारे देवी-देवताओं के समक्ष तिरुमल क्षेत्र में ब्रह्मोत्सवों का आयोजन किया था। 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ 'बृहत्' (बड़ा) है। ब्रह्म + उत्सव - ब्रह्मोत्सव, एक ऐसा उत्सव जो बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। ब्रह्म ने ब्रह्मोत्सव का शुभारम्भ किया, जिसका उल्लेख वेंकटेश सहस्रनाम में विद्यमान है। इस ब्रह्मोत्सव को देखने के लिए भक्त न केवल भारत से अपितु पूरे विश्व के विभिन्न देशों से आते हैं और जीवन की कृतार्थता को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मोत्सव के समय उत्सवमूर्ति भगवान मलयप्पा को विभिन्न वाहनों में बिठाकर तिरुमाड़ावीथियों में घुमाया जाता है। भक्तों का मानना है कि उत्सवों के समय ब्रह्म के साथ-साथ सभी देवता लोग तिरुमल पर प्रच्छन्न रूप में विचरण करते हैं।

हर वर्ष आश्वीयुज मास में यानी कि नवरात्रि के समय ९ दिनों तक ब्रह्मोत्सव चलता है। सिंह, गरुड, शेष, हंस, कल्पवृक्ष इत्यादि वाहनों में मलयप्पा विचरण करते हैं। पहले दिन, शाम अंकुरार्पण कार्यक्रम का आयोजन होता है।

ध्वजारोहण

पहले दिन ध्वजारोहण कार्यक्रम धूम-धाम से मनाया जाता है। ध्वज में गरुड़ का चित्र होता है। यह कार्यक्रम, ब्रह्मोत्सव के अवसर पर देवताओं को दिया जाने वाला निमंत्रण है।

ब्रह्मोत्सव के अवसर पर राज्य के मुख्यमन्त्री के द्वारा भगवान वेंकटेश को रेशम के वस्त्र भेंट किये जाते हैं।

ब्रह्मोत्सव के समय भक्त बड़ी संख्या में उत्साह पूर्ण ढंग से भाग लेते हैं। गायन करते हैं। कुछ लोग नृत्य करते हैं। कुछ लोग भगवान का गुणगान करते हैं। श्रीदेवी एवं भूदेवी समेत वेंकटेश 'मलयप्पा' के रूप में विचरण करते हैं। यह दृश्य भक्तों के लिए नयनानंदकर बन जाता है। वेदमन्त्रों के सुस्वर पाठ की ध्वनियाँ पूरे नभोमण्डल में प्रतिध्वनित होती रहती हैं।

विभिन्न आभूषणों से रंगीन वस्त्रों में सुसज्जित मलयप्पा का दर्शन करना भक्तों के लिए परमानन्ददायक बन जाता है।

चारों तरफ वेंकटेश के नामों का, मंत्रों का गुन्जन सुनाई देता है। हमारे कर्णपुटों के लिए यह अमृत समान है। अंतिम दिन की विशेषता यह है कि भगवान का जन्म नक्षत्र 'श्रवणा' की पवित्रता का आभास भक्तों को होने लगता है।

सुदर्शन चक्रस्नान

नवम दिन प्रातःकाल 'चक्रस्नान' कार्यक्रम का आयोजन होता है। इस अवसर पर भगवान के सुदर्शन चक्र का स्नान कराया जाता है। पुरोहितों के साथ भक्तगण भी पुष्करिणी में चक्रस्नान करते हैं। चक्रस्पर्श से पूरा जल पवित्र हो जाता है। आस्तिकों का मानना है कि इस प्रकार के जल में स्नान करने से कई जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। पुष्करिणी में चक्रस्नान के समय सभी देवता लोग सूक्ष्म रूप में उपस्थित हो जाते हैं। इस घड़ी के लिए देवता लोग लालायित रहते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक दिन एक विशेष वाहन में मलयप्पा विचरण करते हैं। आठवें दिन स्वर्णरथोत्सव का आयोजन होता है।

गरुड की गरिमा

पाँचवे दिन भगवान गरुड वाहन पर विराजमान होते हैं। वाहनों में गरुड़ को श्रेष्ठ वाहन कहा गया है। गरुड़ निरंतर वाहन के रूप भगवान को सेवा में लगे रहते हैं। शास्त्रों में यही कह गया है कि भक्त एवं भगवान में कोई भेद नहीं है। जैसे राम के सेवक या दास के रूप में हनुमान मौजूद है उसी प्रकार भगवान के आवागमन के लिए गरुड़ नियमित हो चुके हैं। अतः गरुड़ एवं भगवान में कोई अन्तर नहीं। गरुड़ निर्भीकता का प्रतीक है। देशिकाचार्य ने अपने 'गरुडपंचाशत्' में गरुड़ की महिमा एवं गरिमा का वर्णन सुचारु रूप से किया है।

'गरुडपंचाशत्' के प्रथम श्लोक में गरुड मंत्र का उल्लेख है।

पक्षि व्यत्यस्त पक्षि द्वितय मुख पुट -
प्रस्फुटोदार तार
मंत्र 'गारुत्मंत तं' हुतवहदयिता -
शेखरं शीलयामः

इस का अर्थ यह है कि आदि में प्रणव (ॐ) उस के बाद 'पक्षि' या इसका उल्टा शब्द 'क्षिप' उसके उपरान्त अग्नि की प्रियतमा को सूचित करने वाला शब्द 'स्वाहा' - इनको जोड़ने से 'गरुड़ मंत्र' बन जाता है। *ॐ क्षिप स्वाहा* अथवा *ॐ पक्षि स्वाहा।*

यद्यपि यह मंत्र छोटासा लगता है। लेकिन इसका प्रभाव अचूक है। किसी गुरु से मंत्र प्राप्त कर, जाप करने से सर्प दोष से मुक्ति मिलती ही है।

गरुडमंत्र चारों पुरुषार्थों को प्रदान करता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष - यह चार पुरुषार्थ हैं। गरुत्मान को संकर्षण का अंश मानते हैं। इस मंत्र को 'ब्रह्मविद्या' कहा गया है। द्वितीय श्लोक में इसका वर्णन देखने को मिलता है, *'प्राची सा ब्रह्मविद्या परिचितगहना पातु गारुत्मती नः'* (गरुडपंचाशत्)।

संकर्षण का अंश होने के नाते गरुड ज्ञान, बल के प्रतीक हैं। अतः गरुडमंत्र का जाप करने वालों को चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। जो मंत्र जाप नहीं कर सकते हैं, वे कम से कम पाँचवें दिन गरुडवाहन पर विराजमान भगवान मलयप्पा का दर्शन करें। इससे भी भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रयोजनों की प्राप्ति होती है।

आगामि नवरात्रि के अवसर पर तिरुमल में ब्रह्मोत्सव में भाग लेने वाले भक्त ही धन्य हैं। कोविड-१९ के कारण ब्रह्मोत्सव एकांत में संपन्न करते हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) का नैवेद्य

- डॉ.जी.मोहन नायुडु
मोबाइल - ९५०२४४७६१७

हिंदू संस्कृति में देवताओं को भोग अर्पित करने की परंपरा रही है। देवी-देवताओं के निवेदन के लिए जिस भोज्य द्रव्य का प्रयोग किया जाता है, उसे ही भोग कहते हैं। इसे प्रसाद, प्रसादी, नैवेद्य आदि नामों से भी जाना जाता है। प्रत्येक देवी-देवता की पूजा की विधि अलग-अलग होती है। उनकी पूजा में अलग-अलग वस्तुएँ अर्पित की जाती हैं। नैवेद्य के बिना पूजा अधूरी मानी जाती है। देवताओं का नैवेद्य अर्थात् देवी-देवताओं के निवेदन के लिए जिस भोज्य वस्तु का प्रयोग किया जाता है, उसे नैवेद्य कहते हैं। देवता को निवेदित करना ही नैवेद्य है। सभी प्रकार के प्रसाद में निम्न पदार्थ मुख्य रूप से रखे जाते हैं - दूध-शकर, शकर-नारियल, गुड-नारियल, घी, दही, विविध प्रकार के फल, लड्डू, सूखे मेवें, खीर, भोजन इत्यादि। भगवान को नैवेद्य समर्पित करने का आरंभ वैदिक काल से ही हुआ। श्रीकृष्ण ने कहा है कि-

*''पत्रं, पुष्पं, फल, तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति
तदहं भक्त्युपहतमश्नामि प्रयतात्मनः।।''*

अर्थात् कोई भक्त मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि समर्पित करता है, तो मैं उस शुद्ध बुद्धि और निष्काम प्रेमी द्वारा प्रेम पूर्वक समर्पित वह पत्र-पुष्पादि में सगुण रूप में प्रकट होकर प्रीति सहित खाता हूँ।

मन और मस्तिष्क को निर्मल, स्वच्छ और सकारात्मक बनाने के लिए हिंदू धर्म में अनेक रीति-रिवाज, परंपरा और उपाय निर्मित किये गये हैं। लगातार प्रसाद का वितरण करने से लोगों के मन में भी आपके प्रति अच्छे भावों का विकास होता है। इससे किसी के भी मन में आपके प्रति राग-द्वेष नहीं पनपता है और आपके मन में भी उसके प्रति प्रेम रहता है। लगातार भगवान से जुडे रहने के कारण चित्त की दशा और दिशा बदल जाती है। इससे दिव्यता का अनुभव होता है तथा जीवन के कष्टों में आत्मबल मिलता है। देवी-देवता भी संकटों के समय हमारे साथ रहते हैं। भजन, कीर्तन, नैवेद्य आदि धार्मिक कृत्यों से जहाँ भगवान के प्रति आस्था बढती है वहीं शांति और सकारात्मक भाव का अनुभव होता है। इससे हमारी मृत्यु के बाद भगवान के उस धाम में भगवान की सेवा प्राप्त होती है। अगला जीवन और भी अच्छे से शांति और सुखमयपूर्वक व्यतीत होता है।

भगवान श्री वेंकटेश्वर जी का नैवेद्य

तिरुमल में भगवान वेंकटेश जी को नैवेद्य समर्पित करने के पहले ही श्री स्वामिपुष्करिणी के पास विराजित

श्री वराहस्वामीजी को प्रप्रथम पूजा, प्रथम नैवेद्य, प्रथम दर्शन करने का रिवाज है। हरेक भक्त इसका पालन करना अनिवार्य है। तिरुमल में रहनेवाले भगवान श्री वेंकटेश्वर जी को हर दिन विविध भोज्य वस्तुएँ नैवेद्य के रूप में समर्पित की जाती हैं। मुख्य रूप से प्रसाद (लड्डू), पुलिहोरा (इमली से बना चावल), पोंगल, वडा, दही चावल के अलावा कई भोज्य पदार्थ भगवान बालाजी को नैवेद्य के रूप में समर्पित करते हैं। ये सभी भोज्य वस्तुएँ यहाँ के पाकशाला (पोटु) में तैयार की जाती हैं।

तिरुमल में विराजमान भगवान श्री वेंकटेश्वर जी का दर्शन करने के लिए हर दिन हजारों भक्त देश के कोने-कोने से आते हैं। विश्व में सबसे अधिक भक्त भगवान बालाजी का ही दर्शन करते हैं। विश्व प्रसिद्ध तिरुमल कलियुग वैकुंठ के रूप में विख्यात है। अब हम भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) को नैवेद्य के रूप में समर्पित किये जानेवाले भोज्य पदार्थों के बारे में जानेंगे। भगवान को कब और कौनसा पदार्थ नैवेद्य के रूप में समर्पित करना है, ये सभी विषय आगम शास्त्र में बताया गया है। गर्भालय में स्वामीजी की मूर्ति की ऊँचाई ९.५ फुट है, इसके अनुसार ही सुबह, दोपहर और शाम को कौनसा पदार्थ नैवेद्य के रूप में भगवान को समर्पित करना है, वह भी आगम शास्त्र में बताया गया है। प्रसाद बनाने के लिए पोटु (जहाँ प्रसाद बनाया जाता है) में कांटों से युक्त लकडी और कच्ची लकडी का प्रयोग नहीं करते। प्रसाद तैयार करनेवाले प्रसाद तैयार करते समय और बाद में भी न सूंघने के उद्देश्य से नाक और मुह को कपडे से बाँधते हैं। इतना ही नहीं प्रसाद भगवान को समर्पित करने तक कोई भी प्रसाद को नहीं देख सकते हैं।

प्रतिदिन स्वामी को तीनों वक्त नैवेद्य समर्पित करते हैं, उन्हीं को बालभोग, राजभोग और शयनभोग कहते हैं।

बालभोग

हर दिन सुबह छह बजे से साढे छह बजे तक के समय में बालभोग समर्पित किया जाता है। इसमें घी से बना हुआ पोंगल, शकर पोंगल, केसरी भात, पुलिहोरा आदि पदार्थ प्रसाद के रूप में समर्पित करते हैं।

राजभोग

भगवान को दस बजे या ग्यारह बजे के बीच में समर्पित करनेवाले नैवेद्य को राजभोग कहते हैं। दोपहर में स्वामीजी को पुलिहोरा, दहीभात, सफेद मिष्टान्न, चीनी से बना अन्न, गरुडान्न आदि भोज्य पदार्थ नैवेद्य के रूप में समर्पित करते हैं।

शयनभोग

स्वामीजी को रात सात बजे से आठ बजे तक के समय में समर्पित किये जानेवाले नैवेद्य को शयनभोग कहते हैं। इसमें लड्डू, वडा, शाकान्न (विविध तरकारियों से बना अन्न) समर्पित करते हैं।

इस प्रकार नैवेद्य समर्पित करते समय मंदिर में घंटियाँ बजाती ही रहती हैं। नैवेद्य समर्पित करते समय गर्भालय के दरवाजे बंद करके केवल नैवेद्य समर्पित करनेवाला अर्चक ही अंदर रहता है। फिर अर्चक पवित्र मंत्रोच्चारण के साथ दाहिने हाथ के सामुद्रिका से प्रसाद छूकर उसको भगवान के दाहिने हाथ और मुंह को लगाकर नैवेद्य समर्पित करता है। इस प्रकार हर दिन भगवान को समर्पित प्रसाद भक्त जनों में बाँटा जाता है।

सुबह से रात तक भगवान को विभिन्न नैवेद्य समर्पित किये जाते हैं। सुबह सुप्रभात से स्वामीजी को जगाकर ताजा गाय का दूध समर्पित कर अर्चन सेवाओं के बाद तिल और सोंठ से युक्त गुड को नैदेद्य के रूप में समर्पित करते हैं तथा बालभोग समर्पित किया जाता है। इसके बाद सर्वदर्शन शुरू होता है। फिर से अर्चना समाप्त के बाद राजभोग समर्पित करके सर्वदर्शन शुरू

करते हैं। फिर शाम को गर्भालय को साफ करके ताजगी पुष्पों से स्वामीजी का अलंकरण होता है। अर्चना के बाद रात में शयनभोग समर्पित करते हैं। आधी रात को शुद्धान्न के बाद स्वामीजी विश्राम लेने से पहले एकांत सेवा के अंतर्गत गर्म दूध, विविध फल, घी से भुने हुए बादाम आदि समर्पित करते हैं।

इस तरह तिरुमल के भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) को हर दिन सुबह सुप्रभात सेवा से लेकर रात में स्वामीजी की एकांत सेवा तक आगम शास्त्र के अनुसार विविध प्रकार के नैवेद्य समर्पित करते हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के नैवेद्य का इतिहास

तिरुमल पुण्यक्षेत्र कलियुग वैकुण्ठ के रूप में प्रसिद्ध है। तिरुमल पहाड पर स्वयंभू के रूप में प्रकट भगवान श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) को श्रीनिवास, सप्तगिरिश, बालाजी, तिरुमलप्पा, तिम्मप्पा, मलयप्पा आदि नामों से भक्तजन संबोधित करते हैं। श्रीनिवास जी का स्वर्ण मंदिर आनंदनिलय के रूप में प्रसिद्ध है। भगवान श्री वेंकटेश्वर जी अर्चन प्रिय, उत्सव प्रिय, संकीर्तन प्रिय ही नहीं नैवेद्य प्रिय भी है। भगवान को समर्पित किये जानेवाले नैवेद्य का बहुत बडा इतिहास है। भगवान बालाजी को लड्डू प्रसाद बहुत पसंद है, यह सर्वविधित है। लड्डू के अलावा कई भोज्य पदार्थ नैवेद्य के रूप में समर्पित किये जाते हैं। नैवेद्य के लिए बहुत सारे राजाओं ने भी अनुदान देकर अपनी भक्ति भावना दिखाई। किसने कितना अनुदान दिया है, इसका विवरण मंदिर के दीवारों पर प्राप्त शिलालेखों द्वारा हम जानते हैं। १९३३ में तिरुमल तिरुपति देवस्थान की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक स्वामीजी का नैवेद्य की प्रक्रिया बहुत निष्ठा के साथ चल रही है।

हर दिन स्वामीजी को त्रिकाल नैवेद्य समर्पित किया जाता है। नैवेद्य समर्पित करने का समय तीन भागों में बाँटा गया है - पहली घडी, दूसरी घडी, तीसरी घडी। इनमें गुरु और शुक्रवार को छोडकर बाकी दिनों में नैवेद्य का समय नहीं बदलता है। गुरु और शुक्रवार को भी दूसरी घडी का समय ही बदलता है। स्वामीजी का पहला निवेदन सुबह ५.३० को आरंभ होता है, दूसरी घडी सुबह १० बजे को और तीसरी घडी रात ७.३० को होती है। गुरुवार और शुक्रवार को दूसरी घडी सुबह ७.३० को होती है। स्वामीजी को हर दिन समर्पित किये जानेवाले भोज्य पदार्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता लेकिन हर निवेदन में विविधता होती है।

सुबह ५.३० बजे को आरंभ होनेवाले निवेदन (पहली घडी) में चीनी से बना पोंगल, पुलिहोरा, दहीभात, लड्डू, वडा समर्पित करते हैं। ये सभी प्रसाद हनुमान जी के मंदिर में और वहाँ के उपालयों में भेजते हैं। सुबह १० बजे की दूसरी घडी के निवेदन में दहीभात, शकर पोंगल, पुलिहोरा, पोंगल, शकरभात इत्यादि नैवेद्य के रूप में समर्पित करते हैं। रात ७.३० बजे की तीसरी घडी के निवेदन में कदंबं, मोलहोरा, तोमाल डोसा, लड्डू, वडा के साथ यदि रविवार है तो विशेषतः गरुड प्रसाद समर्पित किया जाता है।

हफ्ते में एक दिन इन प्रसादों की संख्या बढती हैं। सोमवार विशेष पूजा के संदर्भ में ५१ बडा डोसा, ५१ छोटा डोसा, ५१ बडे पापड, १०२ छोटे पापड समर्पित करते हैं। मंगलवार के निवेदन में मात्रप्रसाद और अन्य मामूली वस्तुएँ रहती हैं। बुधवार के निवेदन में खीर अन्य भोज्य पदार्थ समर्पित किये जाते हैं। गुरुवार के निवेदन में मामूली वस्तुओं के साथ तिरुप्पावै सेवा के सुअवसर पर जलेबी और खीर समर्पित करते हैं। शुक्रवार के निवेदन में अभिषेक के अवसर पर पूरणपोली आदि भोज्य पदार्थों को समर्पित करते हैं। शनिवार के निवेदन में कदंबं, चीनी से बना पोंगल, पुलिहोरा, दहीभात, लड्डू, वडा, मोलहोरा, तोमाल डोसा इत्यादि समर्पित किये जाते हैं।

श्री बालाजी के भक्तों की सेवा में "श्रीवारि सेवक"

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी, मोबाइल - ९८६६०६०२६९

'**श्री**वारु'' तेलुगु भाषा का एक विशिष्ट आदर वाचक संबोधन शद्ब है। ''श्रीवारु'' स्वामित्व के मामले में अभिव्यक्त है। धार्मिक रूप से इस शब्द ''श्रीवारु'' को सात पहाडियों के भगवान बालाजी (श्री वेंकटेश्वर) को संदर्भित करता है। उपरोक्त अर्थों में ''श्री'' का अर्थ देवीलक्ष्मी और ''वारु'' उसके ''पति'' को संदर्भित करता है। जो कि उसका ''पति'' है। आप जानते है कि भगवान श्री वेंकटेश्वर देवीलक्ष्मी के पति महाविष्णु के अवतार है। इसलिए ''श्रीवारु'' का अर्थ केवल ''भगवान बालाजी'' का है।

हिन्दू सनातन धर्म की समृद्धि है कि यह हिन्दू धर्म का प्रचार करता है। जिसका अर्थ है ''मानव सेवा'' मानवता की सेवा दिव्यता की सेवा है। तिरुमलनंबी, रामानुजाचार्य, अनंताल्वान और कई अन्य जैसे प्रसिद्ध आचार्यों ने लोगों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया, जिससे उन्हें स्वर्गीय मुक्ति मिली। ''श्रीवारि सेवा'' की अवधारणा तिरुमल तिरुपति देवस्थान द्वारा इस अनेक विचार से ली गई है और इसे वर्ष २००० में भगवान बालाजी के दर्शन के लिए दूर-दराज के स्थानों से तिरुमल आनेवाले तीर्थ यात्रियों की सेवा करने के उद्धेश्य से पेश किया गया था। शुरुआती दिनों में सिर्फ २०० ''श्रीवारि सेवकों'' के साथ शुरू हुआ; अब तक लगभग पाँच लाख ''श्रीवारि सेवकों'' ने अपनी स्थापना के बाद से अपनी २० सालों की लंबी यात्रा में साथी तीर्थयात्रियों की त्रुटिहीन सेवाएँ प्रदान की है। उनकी सेवाएँ अमूल्य एवं अपार है। ''श्रीवारि सेवक'' आन्ध्रप्रदेश के अलावा तेलंगाणा,

तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उडीशा, नई दिल्ली, छत्तीसगढ, झारखंड राज्यों से हैं। किसी भी दिन कम से कम २००० सेवक सेवा में होंगे, जबकि त्योहारों और छुट्टियों के समय में यह आंकडा तीन गुना हो जाएगा। वही ''श्रीवारि'' के ब्रह्मोत्सव में यह आंकडा दस गुना हो जाएगा। ''श्रीवारि सेवा'' तिरुमल में पूजा के अभिन्न अंग के रूप में बनेगी। सेवकों की राय यह है कि- ''यह न केवल हमारे आध्यात्मिक जीवन को जीवंत करता है और हमारे शरीर और आत्मा को सर्वोच्च भगवान की इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए तैयार करता है; जो और कुछ नहीं बल्कि 'प्यार और स्नेह' के साथ साथी तीर्थ यात्रियों की सेवा करनी है।''

दुनिया भर से भक्त कलियुग वैकुंठवास तिरुमल बालाजी को देखने के लिए आते हैं। भगवान का दर्शन करना एक महान सौभाग्य माना जाता है। क्या भाग्य है, अगर आपको भगवान की उपस्थिति में रहने और उनकी सेवा में भाग लेने का अवसर मिले। तिरुमल तिरुपति देवस्थान ''श्रीवारि'' (बालाजी) की सेवा करने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। ''श्रीवारि'' (बालाजी) की सेवा में लगे भक्त ति.ति.दे. के विभागों में शामिल होते हैं। ऐसा इस सेवा में आए हुए लोगों को भोजन, आवास और अंतिम दिन बालाजी के दर्शन भाग्य प्रदान कर रहे हैं। अब तक ''श्रीवारि सेवक'' (सामान्य), परकामणि सेवा, लड्डू प्रसाद सेवकों की तरह रहते थे। हाल ही में, ति.ति.दे. ने यात्री कल्याण सेवा की शुरुआती की।

श्रीवारि सेवक (सामान्य)

श्रीवारि सामान्य सेवक १० व्यक्तियों से समूह के रूप में या व्यक्तिगत रूप से भाग ले सकते हैं। वे अन्नप्रसाद वितरण, कर्मचारी कैंटीन, सब्जी काटने, फूड-कोर्ट, गो-सेवा, फूलंगिसेवा, वैकुंठ-२ में अन्नप्रसाद वितरण, क्यू लाइन्स, स्वास्थ्य, सतर्कता, कल्याणकट्टा (बाल कटवाने का स्थल), ए.एन.सी. पूछ-ताछ, सप्तगिरि सदन, नारियल बिक्री, पुस्तक बिक्री, हेल्पडेस्क, डेयरी वितरण, सामान्य श्रेणी में साफ-सफाई और तिरुनामम(तिलकधारण) जैसी सेवाओं के लिए www.tirumala.org पर जाकर रजिस्टर करें। ''श्रीवारि सेवा'' लिंक पर क्लिक करने से विविध सेवाएँ, सेवा के लिए जिन दिनों के लिए खाली है वे दिन दिखाई पडते हैं। जो सेवक के रूप में पंजीकृत है, वे तिरुमल में 'श्रीवारि सेवक अनुभाग' में संपर्क करें।

परकामणि सेवा (हुंडी उपहारों की गिनती)

परकामणि सेवा के लिए आए हुए भक्त माने श्रीवारि सेवक (बालाजी) के लिए हुंडी में आए हुए उपहारों की गणना करना होगा। यह सेवा निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक कर्मचारियों और सरकारी कार्मचारियों दोनों के लिए खुली है। आयु ३५ से ६५ वर्ष के बीच में होनी चाहिए। इस सेवा में ४ या ३ दिन रहने के लिए सुनिश्चित करें। ४ दिनों के लिए सोमवार से लेकर गुरुवार तक काम करना होगा। ३ दिनों की सेवा के लिए शुक्रवार से रविवार तक करना होगा। चार दिनों की सेवा हेतु रविवार एवं तीन दिनों की सेवा हेतु गुरुवार के दोपहर ३ बजे के अंदर सेवासदन में रिपोर्ट

करना चाहिए। जब पोशाक की बात आती है तो, उनको केवल निक्कर, धोती और बनियन (सफेद रंग के) पहन कर परकामणि में जाना चाहिए। चाँदी एवं सोने से संबंधित (किसी भी अन्य प्रकार के) आभूषणों को पहन कर न जाना चाहिए। इस सेवा के लिए दो महीने पहले किसी भी तारीख को कोटा जारी किया जाएगा। इस सेवा के लिए आए हुए भक्त एक दिन तिरुपति प्रशाशनिक भवन में स्थित सिक्के की परकामणि एवं तिरुचानूर श्री पद्मावती माताजी के मंदिर में हुंडी में आए हुए उपहारों की गणना करना होगा।

लड्डू प्रसाद वितरण सेवा

लड्डू प्रसाद सेवा के लिए आनेवाले सेवकों को लड्डू प्रसाद काउंटरों पर काम करना होगा। कुछ काउंटर उनके द्वारा चलाए जाते हैं। कंप्यूटर का ज्ञान, सरकारी और निजी नौकरी करनेवाले लोग इस सेवा में भाग ले सकते हैं। आयु १८ से ६५ वर्ष के बीच होनी चाहिए। इस सेवा के लिए भी ऑन लाइन में पंजीकृत करना होगा। कोटा एक या दो महीनों के पहले जारी किया जाता है। ऑन लाइन के द्वारा पंजीकृत सेवक एक दिन पहले सेवा सदन में रिपोर्ट करना होगा।

तीर्थयात्री कल्याण सेवा

तीर्थयात्री कल्याण सेवा को ति.ति.दे. ने कुछ वर्षो पहले शुरुआत की, जो तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने वाले भक्तों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान करते है। कोटा एक महीने पहले जारी किया जाता है। ये सेवक इस बात की निगरानी करते है कि भक्तों को ति.ति.दे. द्वारा प्रदान की जानेवाली सुविधाएँ नियमित रूप से प्राप्त हो रही है या नहीं। इस सेवा के लिए केन्द्रीय और राज्य के सार्वजनिक क्षेत्र के विभागों में राजपत्रित स्थिति में रहनेवाले कर्मचारी भाग ले सकते हैं।

''श्रीवारि सेवकों'' के लिए मार्गदर्शक नियम

''श्रीवारि की सेवा'' में एक सप्ताह की अवधि के लिए कम से कम दस व्यक्तियों का समुदाय भाग ले सकता है। निःस्वार्थ सेवाएँ प्रदान करने के लिए इन व्यक्तियों को आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता है। लिंग भेद नहीं है। इच्छुक व्यक्ति उनका नाम, पता, आयु, व्यवसाय, फोन या मोबाइल नंबर और स्टांप-सैज छायाचित्र आदि विवरण को एक महीने अग्रिम इस पेत पर भेजें -

'प्रजासंपर्काधिकारी, तिरुमल तिरुपति देवस्थान, के.टी.रोड, तिरुपति-५१७ ५०१', अन्य विवरण के लिए संपर्क करें- ०८७७-२२६३५४४, २२६३२९३.

१) श्रीवारि सेवा में भाग लेने वाले समूह का नेता या संयोजक सेवकों के पूरे विवरण तिरुमल में स्थित श्रीवारि सेवासदन में देना होगा।

२) श्रीवारि सेवक अपने साथ बच्चे, वृद्ध व रोगियों को न लाये। अगर कोई लाए, तो उनको सेवा करने की अनुमति नहीं दी जाती है।

३) श्रीवारि सेवासदन में सेवकों को आइ.डी.कार्ड देकर, कार्यस्थान के बारे में सूचना देते हैं। सेवकों को प्रतिदिन कम से कम छः घंटों तक सेवा में कार्यरत होना पडता है।

४) प्रतिदिन सुबह ९.०० बजे से १०.०० बजे तक एवं सायं ६.०० बजे से ७.०० बजे तक भजन, सत्संग और प्रशिक्षण दी जायेंगी। जो सुबह श्रीवारि सेवा में कार्यरत रहते हैं। उनको शाम को कक्षाओं में तथा शाम को सेवा में सेवारत रहते हैं, उनको सुबह कक्षाओं में उपस्थित रहना जरूरी है।

५) तिरुमल के आर.टी.सी. बस स्टैण्ड में स्थित श्रीवारि सेवासदन कार्यालय में कार्यरत विशेषाधिकारी या ए.इ.ओ. के सामने अपने को निर्धारित तारीख की सुबह १०.०० बजे से सायं ४.०० बजे के बीच में उपस्थित होना चाहिए।

६) सदा 'गोविंद' नाम का जप करें। भक्तों के साथ 'गोविंदा, गोविंदा' का उच्चारण करते हुए प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।

७) यात्रियों की सहायता हेतु यह स्वैच्छिक सेवा रखी गई है। किसी को भी धन, वस्तु रूप में कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं है। यह सेवा बिल्कुल मुफ्त हैं।

८) हिन्दू संप्रदाय के अनुसार 'श्रीवारि सेवक' को तिरुनाम / तिलक व कुंकुम / चंदन की बिंदियों को लगाना अनिवार्य है।

९) श्रीवारि सेबकों को उनके निर्देशित प्रांत में मात्र ही सेवा करना होगा। गर्भालय में सेवा करना जरूरी नहीं है। उसके लिए दबाव मत डालें।

१०) हिन्दूधर्मावलंबी ही श्रीवारि सेवक होने लायक है।

११) सेवासदन में ठहरने वाली महिलाओं को नैट गौन (Night Gown) पहनना, पुरुष सेवकों को षार्टस(Shorts) पहनना मना है।

१२) श्रीवारि सेवकों को अनिवार्य रूप से आधार कार्ड (ओरिजिनल एवं जिराक्स की प्रतियाँ) ले आना पडेगा। अगर आधार कार्ड प्रस्तुत किया नहीं जाता, तो सेवा में भाग लेने की संभावना नहीं होती है।

१३) सेवा में उपस्थित होनेवाले सदस्यों को तिरुमल तक लें आने तथा पुनः उनके स्वस्थल तक पहुँचाने की पूरी जिम्मेदारी, वृंद नेता की होती है।

१४) निर्देशित वस्त्रधारण -

पुरुष - सफेद (धोती, उत्तरीय, कुर्ता पायजामा)।

स्त्रियाँ - लालवर्ण किनारे से युक्त केसरी वर्ण की साडी, लाल वर्ण किनारे युक्त अंगि(चोली) (या) केसरी रंग का कुर्ता, लाल वर्ण पायजामा, लालवर्ण दुपट्टा का पहनना अनिवार्य है।

इस प्रकार आप सभी अपने-अपने जीवन में किसी न किसी की सहायता करते रहते हैं। ''मानव सेवा ही माधव सेवा'' की सूक्ति के अनुसार माधव सेवा में रहे भक्तों की सेवा करना एक परमानंद होता है। यह भाग्य सब को नहीं मिलता है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने श्रीवारि भक्तों की सेवा करने का सौभाग्य पूरे देश की जनता को दिया गया है। इस अवसर को सदुपयोग करने का भाग्य सब को नहीं मिलता है, केवल कुछ लोगों को ही मिलता है। अंततः मैं यही कहता हूँ कि गोविंद के भक्तों की सेवा करना परम आनंद की बात है। जीवन में अनेक दिन अनावश्यक रूप से किसी न किसी की सोच में बिताते रहते हैं। एक दिन श्रीवारि के भक्तों की सेवा में व्यतीत करना, हमारे जीवन के लिए मोक्षदायक एवं सुखदायक है। स्वार्थपूरित इस कलियुग में सेवा तत्परता की भावना को लोगों में जगाएँगे।

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

०८-१०-२०२१
शुक्रवार
रात
हंसवाहन

०९-१०-२०२१
शनिवार
दिन
सिंहवाहन

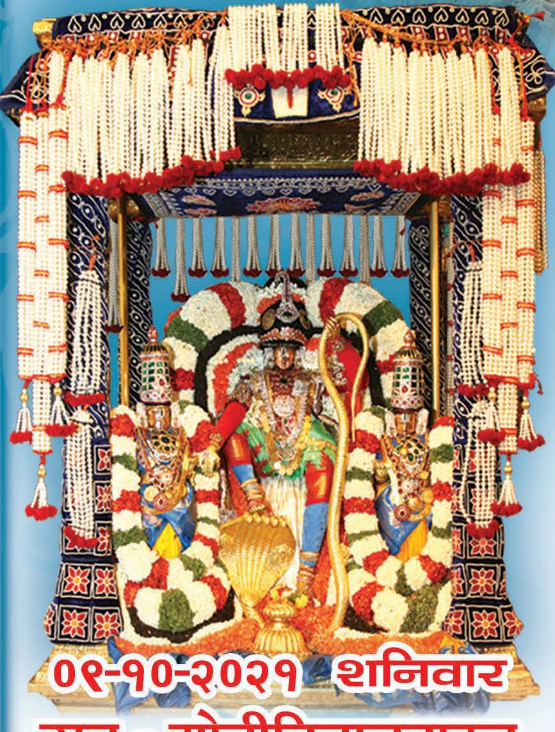

०९-१०-२०२१ शनिवार
रात - मोतीवितानवाहन

१०-१०-२०२१ रविवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

११-१०-२०२१
सोमवार
दिन -
पालकी में
मोहिनी अवतारोत्सव

१०-१०-२०२१
रविवार
रात - सर्वभूपालवाहन

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

१२-१०-२०२१
मंगलवार
रात - गजवाहन

१२-१०-२०२१
मंगलवार
दिन
हनुमद्वाहन

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

१३-१०-२०२१
बुधवार
दिन
सूर्यप्रभावाहन

१३-१०-२०२१
बुधवार
रात
चंद्रप्रभावाहन

जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - ९८४९६७०८६८

जल जीव और जीवन का द्योतक है। पंचभूतों में जल अत्यंत महत्वपूर्ण तत्त्व है। प्राणी मात्र के लिए जल ही आधार है। जल ही प्राण है। जल ही जीवन है। पंचभूतों में वायु की तरह जल जीव के लिए अत्यावश्यक है। प्राणी मात्र वायु रहित कुछ क्षणों के लिए और जल रहित कुछ घंटों के लिए जी सकता है। जल प्रकृति प्रदत्त और भगवान प्रदत्त है। जल प्रदाता वरुण देव है। इंद्र के आदेश से वरुण देव जल प्रदाता बनते हैं। सर्व लोकों में जल का संचरण और वितरण करते हैं। उस इंद्र को भी अपने अधीन करनेवाले देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर है। इसलिए जहाँ वे बसे है, कलियुग वैकुंठ कहलानेवाला तिरुमल जलस्त्रोतों का अक्षय कोष बन गया है। श्री महाविष्णु के अवतारी और कलियुग के 'अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक' श्री वेंकटेश्वर जलाधीश भी हैं। सप्तगिरियों के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर अपने पावन वेंकटगिरियों को जलस्त्रोतों से भर पूर शोभित किया है।

'जल' अमरवाणी संस्कृत से निष्पन्न शब्द है। जल जल ध्वन्यार्थक शब्द जल का अर्थबोध कराता है। 'जल' एक द्रव रूप है। जल का घन रूप भी होता है। जिसे हिम कहा जाता है। 'जल' का वायु रूप भी होता है। उसे भाप कहा जाता है। जल अनेक रूपों में अनेक पदार्थों में पाया जाता है। संस्कृत का यह शब्द अनेक शब्दों के निर्माण में बडी भूमिका निभाता है। जैसे जलज, जलोदर, जलनिधि, जलाधीश, जलाधिदेव आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। कहने का मतलब है कि जल सिर्फ जीवन में ही नहीं जीवनाधारित भाषा में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जल प्राणियों के लिए प्राण प्रदायिनी के साथ-साथ प्राण नाशक भी है। जल प्रलय विध्वंसकारी है। वही निर्मल शीतल जल प्राण प्रदायिनी है। मनुष्य जल को अनेक रूपों में उपयोग करता है। भगवान का 'तीर्थम' भी इस में शामिल है। मनुष्य के जन्म से लेकर मरने तक तथा प्रथम संस्कार से लेकर अंतिम संस्कार तक जल के महत्व को कोई ठुकरा नहीं सकता है। जीवन में इतना महत्व रखनेवाला जल मनुष्य के लिए तो अनंत वर-दायिनी है। उस अनंत वरदायिनी के अधिनेता साक्षात जलाधीश श्री वेंकटेश्वर भगवान हैं।

ब्रह्मांड पुराण में जल का विवेचन है। जल प्रलय का चित्रण है। समस्त

सृष्टि जल से आच्छादित होने पर परमेश्वर वटपत्र सायी बन कर जल में विचरण करते पाया गया है। इतना महत्व रखनेवाला जल पृथ्वी पर अनेक रूपांतर करते पाया जाता है। जल का मूलस्त्रोत जलनिधि है। यानी सागर है। सागर से पृथ्वी पर जल वर्षा के रूप में बरसता है। फिर नदी, नाले, तीर्थ आदि के माध्यम से फिर जलनिधि में विलीन होता है। जलनिधि परमेश्वर का सृजन है। प्राणी मात्र के सृजन के साथ-साथ जल का भी सृजन तद्वारा पूरी प्रकृति का सृजन ब्रह्म के द्वारा ही संभव है। ब्रह्म के द्वारा सृजित जल को शिव शंकर गंगा के रूप में अपने सर पर धारण करते हैं। जलनिधि कन्या से विवाह करनेवाले श्री महाविष्णु ने उसी जल को अपना शयन बनाया है। सिर्फ ब्रह्मांड पुराण में ही नहीं अन्य पुराणों में भी जल तथा जल के महत्व की उद्घोषणा हुई है। मुख्य रूप से ब्रह्मांड पुराण में आदिवराह क्षेत्र और उसके अपार जलस्त्रोतों का विस्तृत वर्णन पाया जाता है। ब्रह्मांड पुराण में सूत और शौनकादि मुनियों के संभाषण के रूप में इन जल स्त्रोतों का परिचय दिया गया है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी की परम भक्तिन मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने अपने 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' में ब्रह्मांड पुराण से प्राप्त इन जल स्त्रोतों का बहुत मार्मिक एवं सुंदर वर्णन किया है।

जल मनुष्य को जीवदान देता है। मनुष्य जीवन को पुनीत भी बनाता है। मनुष्य के समस्त कार्य जल के साथ संबंध रखते हैं। जल मूलतः द्रव रूप का होने पर भी उस का वायु रूप घन रूप भी होता है। जल का यह अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता है। जल जिस पदार्थ में होता है उस पदार्थ के रूप को वह ग्रहण कर लेता है। जल अगर मटकी में होता है तो मटकी का रूप, नदी में होता है तो नदी का रूप, पुष्कार में होता है तो पुष्कर का रूप आदि। जल पृथ्वी पर ही नहीं आकाश में और पाताल में भी होता है। जल स्थिर और चर दोनों रूप में भी होता है। अनंत जलनिधि जल का स्थिर रूप हैं तो महानद और नदियाँ चर रूप हैं। पुष्कार जल का स्थिर रूप है तो नाले जल के चर रूप हैं। जल को पूरे ब्रह्मांड में फिरोने का कार्य साक्षात ईश्वर करता है। जल उन्हीं के अधीन में रहता है। वे जलाधीश हैं। श्री वेंकटाचलाधीश श्री वेंकटेश्वर भगवान साक्षात वे जलाधिदेव हैं। अपनी पर्वत-श्रृंखलाओं को उन्होंने अपने जल-स्त्रोतों का आधार बना लिया है। श्री वेंकटाचल साक्षात स्वर्ग से प्राप्त क्रीडाचल है। भगवान वराहस्वामी के आदेश से गरुड इसे स्वर्ग से ले आये हैं। समस्त लोकों को तरने के लिए इसे श्री वेंकटाचल में खडा किया है।

श्री वेंकटेश्वर भगवान के पाद स्पर्श से पुनीत श्री वेंकटाचल जल का अक्षय स्त्रोत है। श्री वेंकटाचल में अनेक पुष्कर, झरने तीर्थादि पाये जाते हैं। ब्रह्मांड, भविष्योत्तर, पद्मपुराण आदि में श्री वेंकटाचल में स्थित अनेक तीर्थों और उन के

महत्व का वर्णन प्राप्त होता है। साक्षात श्री महाविष्णु के अवतारी रूप श्री वेंकटेश्वर भगवान अपने क्रीडा स्थल श्री वेंकटाचल को अनेक पवित्र पुष्करों से सजाया है। इन्हीं पुष्करों के कारण ही श्री वेंकटाचल ने प्रकृति का सुरम्य रूप धारण कर लिया है। इन पुष्करों के कारण ही श्री वेंकटाचल में जीव-जंतु, वन्य प्राणी, वनस्पति-औषधियाँ, झील-झरनें निर्मित हुए है। इस की स्वच्छता और पवित्रता के कारण ही उन के सौंदर्य को निहारने देवतागण, यक्ष, गंधर्व, मुनिगण आदि ऊर्ध्व लोकों से पधारते हैं। श्री वेंकटाचल की अक्षय कीर्ति उस पर बसे इस पुष्करों के कारण ही है। कलियुग देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर की महिमा से यहाँ का जल अति पवित्र और अत्यंत माहात्म्य का हो गया है। शत सहस्त्रों की संख्या में स्थित इन जल-स्त्रोतों के बारे में जानना मानव मात्र के लिए अत्यंत आवश्यक है। श्री वेंकटेश्वर भगवान की अप्रतिम भक्तिन कवयित्री मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने ब्रह्मांड पुराण और अन्य स्त्रोतों से संग्रहण करके अपने बृहद काव्य ''श्री वेंकटाचल माहात्म्यम'' में इन सारे जल स्त्रोतों का विपुल वर्णन प्रस्तुत किया है। उन्होंने न केवल इन जल-स्त्रोतों का वर्णन किया बल्कि उन जल-स्त्रोतों से अपने जीवन को धन्य बनाने वाले श्री वेंकटेश्वर के परम भक्तों का परिचय भी प्रस्तुत किया है। इन जल-स्त्रोतों से विपन्न, संकटों से ग्रस्त श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अनेक भक्त पुनीत हुए हैं। अपनी खोयी हुई संपदाओं को प्राप्त किया है। अपने समस्त पापों को इन जलस्त्रोतों के जल से धोकर अपने जीवन को धन्य बनाया है। उन की पुण्य जीवनियों के बारे में सुनना ही अत्यंत पुण्य काम है।

श्रीस्वामिपुष्करिणी

जलाधिदेव स्वामी श्री वेंकटेश्वर की जलनिधियों में सर्वोत्तम और अत्यंत पवित्र जल-स्त्रोत 'श्रीस्वामिपुष्करिणी' नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी है। यह महिमामय पुष्करिणी श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मूल मंदिर की उत्तर-पूर्व दिशा में श्री आदिवराह स्वामी के मंदिर के सामने बसी हुई है। तिरुमल पहाड की यात्रा करनेवाला शायद ही ऐसा कोई होगा जो इस पुष्करिणी में डुबकी लगाये बिना अपनी यात्रा को पूरा करेगा। अत्यंत आह्लादमय वातावरण में बसी हुई यह पुष्करिणी अनंत काल से अनेक भक्त जनों का उद्धार किया है। त्रेतायुग के दशरथ महाराज से लेकर देवताओं के सेनानायक कार्तिकेय तक इस पुष्करिणी से लाभान्वित हुए हैं। इस पुष्करिणी का वर्णन ब्रह्मांड पुराण में है। शौनकादि मुनियों के द्वारा इस पुष्करिणी के बारे में जानने की जिज्ञासा व्यक्त करने पर पुराण-विद सूत महर्षि ने इस के बारे में विस्तृत रूप से बताया है। यह पुष्करिणी साक्षात वैकुंठ में स्थित क्रीडाचल का अभिन्न अंग है। अनेक पवित्र नदियाँ यथा गंगा-

यमुनादि अनेक जल-स्त्रोत इस में संगम होते हैं, ऐसा भक्तों का विश्वास है। वैकुंठ में रहनेवाले क्रीडाचल पर रहनेवाली पुष्करिणी में सुगंध-परिमल से भरा जल सदा रहता है। उस पुष्करिणी में श्रीदेवी और भूदेवी के साथ स्वामी क्रीडा किया करते हैं। वे स्वामी ही श्रीदेवी और भूदेवी के साथ श्री वेंकटाचल पर बसने धरती पर उतर आये हैं। श्रीहरि के मनोनुकूल गंगादि नदियाँ यहाँ इस तीर्थ में अखिल जनों के पापों को दूर करने प्रवाहित होती हैं। इस के अतिरिक्त यह पुष्करिणी सब के इष्ट कार्य भी पूरा करनेवाली वरदायिनी मानी जाती है।

ऐसे श्रीस्वामिपुष्करिणी के दर्शन से और उस के जल को पान करने से समस्त जन अपने जन्म को धन्य बना लेते हैं। इस के अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक स्नान संध्या-वंदन करनेवाले ब्राह्मण भी इस में स्नानादि करने से वा पुण्य प्राप्त करते हैं। इस के अतिरिक्त पुष्करिणी के स्नान के साथ-साथ एकादशी व्रत, सद्गुरु पाद सेवा आदि करने से विशेष फल प्राप्त होता है। ऐसा अवसर अन्यत्र दुर्लभ है। सकल स्थावर जंगम प्रणियों में मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ जन्म है। ऐसे मनुष्य जन्म में वेंकटाद्री में स्थित इस पुष्करिणी में स्नान करना अत्यंत पुण्यप्रद है। इसलिए वेंकटाद्रि का माहात्म्य और पुष्करिणी के प्रभाव के बारे में बताना कठिन काम है। ब्रह्मांड पुराण में सूत महर्षि ने शौनकादियों को इस के बारे में बताया है।

पूर्व काल में देवताओं का सेना नायक कुमारस्वामी ने देवताओं के आग्रह पर तारकासुर नामक राक्षस का वध किया था। तारकासुर का वध करने से कुमारस्वामी को ब्रह्म हत्या करने का पाप लग गया था। ब्रह्म हत्या के दोष से मुक्त होने केलिए शिव पुत्र कुमारस्वामी ने इसी पुष्करिणी में स्नान किया। अपने ब्रह्म हत्या पाप से मुक्त हो गए। सूत के अनुसार इस पुष्करिणी की महिमा के बारे में सुन कर कुमारस्वामी शीघ्र ही वेंकटाद्री पर पहुँच कर इस पुष्करिणी में स्नान करके वराहस्वामी के दर्शन करके उन की प्रार्थना की है। तब वे अपने पाप से मुक्त हो गए।

इसलिए श्री वेंकटाचल में स्थित यह पुष्करिणी भयंकर पापों को भी दूर करनेवाली है। सारे पापों को पावन बनानेवाली पुष्करिणी है। इस धरती पर ऐसी पुष्करिणी दूसरी नहीं है। इसलिए सारे राजा और जन समेत सारे लोग पाप निवारण के लिए यहीं पर आते हैं। इस रूप में यह पुष्करिणी राजाओं से ही नहीं बल्कि रुद्र, शुक्र आदि देवताओं से भी सेवित है। इस रूप में यह सकल लोगों को श्रीकर और शुभकर बनी है। हरि कल्याण का यह गुण सदा इस में रहता है। प्राकृत जनों को यह प्रकृति की तरह, पुण्यात्माओं को यह पुण्य तीर्थ की तरह दिखाई पडती है। ऐसी पुष्करिणी के तट पर वेंकटाचल में स्वामी श्री वेंकटेश्वर भक्तजनों को पुण्य दर्शन देते हैं। जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर के इस जल-स्त्रोत-निधि की वजह से ही यह पर्वत ही अत्यंत महत्व वाला पुण्य स्थल बन गया है।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

शक्तिरूपा माँ दुर्गा

- श्री अंकुश्री
मोबाइल - ८८०९९७२५४९

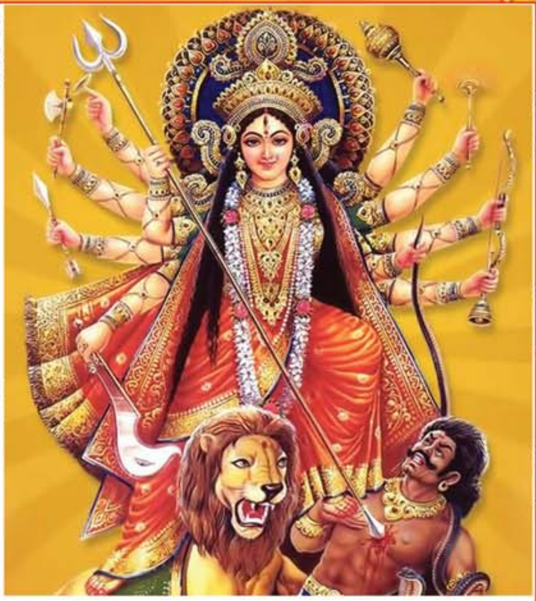

पेड़ों की पत्ती तक नहीं हिला पाने वाली हवा जब तेजी से चलती है और तूफान का रूप ले लेती है तो वह पेड़ों को उखाड़ डालती है। यह उस हवा की शक्ति का परिणाम है। आणविक शक्ति के बल पर भारी-भरकम रॉकेट को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण शक्ति के विरुद्ध आकाश में संप्रेषित कर दिया जाता है। साधारण मनुष्य आत्मशक्ति से बड़े-बड़े असाधारण कामों को कर डालता है। यह सब शक्ति का परिणाम है।

शक्ति प्राकृतिक हो या वैज्ञानिक अथवा आंतरिक - इसका संचालन एक ही स्रोत से होता है। उसे हम आध्यात्मिक अथवा दैविक शक्ति-स्रोत कह सकते हैं। तरह-तरह की साधना और आराधना द्वारा इस दैविक शक्ति-स्रोत से शक्ति प्राप्त कर उसके बल पर अनेक लोगों द्वारा बड़े-बड़े काम किये गये हैं।

आदिकाल से हमारे यहाँ शक्ति की आराधना होती रही है। वैदिक युग में मातृपूजा का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद में शक्ति के दो रूपों का वर्णन मिलता है। एक दिव्य माता का रूप जो महाशक्ति का द्योतक है और दूसरा आंतरिक शक्ति का रूप, जिससे व्यक्ति को आंतरिक सुख अथवा आनंद की प्राप्ति होती है।

पौराणिक युग में शक्ति पूजन की परम्परा का सर्वाधिक विकास हुआ। अनेक मंदिरों तथा मूर्तियों का निर्माण किया गया और उसके पूजन हेतु पुराण, आगम तथा तंत्र आदि की रचना की गयी। देवी भागवत पुराण में शक्ति निरूपण का विशेष उल्लेख किया गया है। उसमें शक्ति को एक रूपा भगवती के रूप में प्रतिस्थापित किया गया है। शक्ति पूजा थोड़ी भिन्नता के साथ प्रायः हर जगह व्याप्त है। हमारे यहाँ यह कहीं मातृरूप में तो कहीं शक्ति रूप में, कहीं बुद्धि रूप में तो कहीं लक्ष्मी रूप में पूज्य है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार दुर्ग नामक महादैत्य से देवता त्रस्त थे। उसे मारने के लिये शिव ने शक्तिरूपा देवी को भेजा। दुर्ग नामक महादैत्य का संहार करने के कारण देवी का नाम 'दुर्गा' पड़ा।

शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिये दुर्गा या काली की आराधना का प्रसंग पुराणों एवं इतिहासों में मिलता है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से महाभारत युद्ध आरंभ करने से पूर्व दुर्गा की पूजा करायी थी। रावण के साथ युद्ध के लिये निकलने से पूर्व श्रीराम ने भी दुर्गा की आराधना की थी। दानवीर कर्ण बिहार के कर्णचौरा (मुंगेर) नामक स्थान पर भगवती की पूजा करने जाया करते थे। कालीदास उज्जैन के एक मंदिर में शक्तिरूपा दुर्गा की पूजा किया करते थे। राजपूत तथा मराठे राजाओं की भी युद्ध में जाने से पूर्व शक्ति-पूजन करने की परंपरा थी। महाराणा प्रताप

एवं छत्रपति शिवाजी के प्रसंगों से यह बात प्रमाणित होती है। शक्तिरूपा दुर्गा की पूजा के सैकड़ों उदाहरण प्रचलित हैं और प्रति दिन ऐसे उदाहरण बन रहे हैं।

मोहन-जो-दारो और हड़प्पा की खुदाई में मातृदेवी की मिट्टी की अनेक मूर्तियाँ मिली हैं। इस तरह की मूर्तियाँ मेसेपोटामिया, थाईलैंड, नील नदी की घाटी, ईरान और एशिया माइनर में भी खुदाई के दौरान प्राप्त हुई हैं। कुशाण काल, शुंग काल और मौर्य काल की प्राप्त मूर्तियों से भी यह बात उभर कर सामने आती है कि उस समय भी शक्ति की पूजा की जाती थी, जो दुर्गा रूप में प्रतिस्थापित थी।

शक्ति की उपासना के लिये हम दुर्गा या काली की पूजा करते हैं। माँ काली के संहारक रूप की तुलना में अष्टभुजी माँ दुर्गा के सौम्य रूप की पूजा अधिक प्रचलित है। जो गृहस्थों द्वारा की जाती है। वैसे काली हो या दुर्गा सभी एक ही शक्ति के अलग-अलग रूप हैं।

पूजा और आराधना यों तो कभी भी की जा सकती है, मगर शक्ति पूजा के लिये चैत्रमास में वसंत नवरात्रि, और आश्विन के शुक्ल पक्ष की पाड्यमी से नवमी तक तिथि को नवरात्रि की संज्ञा दी गयी है। इस अवधि में अधिकाधिक लोग शक्ति की पूजा-आराधना करते हैं। दो गुप्त नवरात्रि भी हैं। आषाढ़ मास में पाड्यमी से शुरू होनेवाले नवरात्रियाँ 'वाराहि नवरात्री' और माघ मास में पाड्यमी से शुरू होने वाले नवरात्रि 'श्यामला नवरात्रि' कहते हैं। आषाढ़ और माघ मास ये दोनों नवरात्रियों को 'गुप्त नवरात्रि' कहते हैं। मगर आश्विन नवरात्रि का विशेष महत्व है और उसमें बहुत सारे स्त्री-पुरुषों द्वारा माँ के शक्ति रूप की पूजा-आराधना की जाती है। इसी अवसर पर सार्वजनिक दुर्गा पूजा का भी आयोजन किया जाता है। जिसे 'दशहरा त्योहार' कहते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री वेंकटेश्वर के पदकार अन्नमाचार्य

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - ९४४१२५४०६१

प्रस्तावना

आन्ध्रप्रदेश भारत का धान्यागार ही नहीं, बल्कि भक्ति-तत्त्व का परम आगार भी है! यहाँ हजारों की तादाद में अनगिनत देवी-देवताओं के दिव्य मंदिर हैं। तिरुपति, श्रीशैलम्, इंद्रकीलाद्रि, अन्नवरम्, सिंहाचलम्, श्रीकालाहस्ती आदि महान् पुण्यक्षेत्र हैं, जो भगवान के दिव्य-भव्य, आराम-स्थल हैं! और भी ऐसे असंख्याक महान् दर्शनीय मंदिर हैं, जहाँ भक्त-कोटि का निरंतर प्रवाह होता रहता है।

और, इन प्रसिद्ध दैवी आयतनों में आसीन महान् देवी-देवताओं की महिमा के वैभव का गायन अनेक महानुभावों ने किया हुआ है। उन महान् भक्त कवियों ने अपने-अपने आराध्य देवी-देवताओं की महिमा का खूब गायन कर जन-साधारण में उनकी महिमा की व्याप्ति की थी, जिस घन-प्रयास के द्वारा उस स्थान में विराजमान देवता की व्याप्ति का काफी विस्तार हो गया था!

ऐसे महान भक्त कवियों में आन्ध्रप्रान्त में सर्व प्रथम गिना जाता है - ताल्लपाका अन्नमाचार्य जी महराज!

पद-रचनाकार अन्नमाचार्य

हिन्दी में सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, केशवदास, कबीरदास, अष्टछाप के कवि आदि महानुभावों ने अपने-अपने आराध्य भगवान के प्रति भक्ति-भावना में विभोर होते हुए असंख्य बेजोड़ पदों की रचना की थी। इन पदों में उन भक्त कवियों अपने आराध्य को यथाशक्ति मूर्तिमंत बना के दिखाया। इसी प्रकार आन्ध्र-प्रान्त के अन्नमाचार्य ने तिरुमल श्री वेंकटेश भगवान को अपना आराध्य बना कर उसकी अपार महिमा का विशुद्ध गायन में ३२ हजार अनुपम पदों का अपनी मातृभाषा तेलुगु में प्रणयन कर भक्त जन-सामान्य में उनका असाधारण प्रचार किया था।

अन्नमय्या का जनन

अन्नमय्या १५वीं शताब्दी का महापुरुष था। उसका जनन आन्ध्रप्रान्त के रायलसीमा के कड़पाजिले में

''ताल्लपाका'' नामक एक गाँव में संपन्न हुआ था। ताल्लपाका एक ब्राह्मण-अग्रहार था। माता लक्कमांबा तथा पिता केसनमंत्री था।

लक्कमांबा-केसनमंत्री-दंपती अधेड़ उम्र तक निस्संतान रहे। संतान के हेतु इस पुण्य दंपतियों ने काफी प्रयास किया था। और अनगिनत पूजा-व्रत रखा था। इसी प्रयास में उन दंपतियों ने तिरुमल-यात्रा की थी! उनकी विशुद्ध भक्ति का अनुमोदन हुआ; विष्णुभगवान का आयुध ''नंदक'' नामक खड्ग ने लक्कमांबा के गर्भालय में शिशु बन कर प्रवेश किया और लक्कमांबा ने गर्भ-धारण किया था!! फिर अब क्या था?! - महाविष्णु के अपरंपार अनुग्रह के तौर पर अन्नमय्या का जनन हो गया था। ताल्लपाका गाँव में ''चेन्नकेशवस्वामी'' का मंदिर था। अन्नमय्या का परिवार सदर मंदिर के पुजारी था! चेन्नकेशवस्वामी का अर्थ ''सुंदर महाविष्णु'' है। चेन्नकेशवस्वामी के मंदिर के पुजारी स्वतस्सिद्ध ''श्रीवैष्णव'' होते थे। अतः अन्नमय्या भी महाविष्णु भक्त था।

अन्नमय्या की तिरुमल-यात्रा

ताल्लपाका में ही अन्नमय्या की शिक्षा-दीक्षा हुई थी। अन्नमय्या के परिवार को काफी खेती थी। बालक अन्नमय्या एक दिन घास काट लाने खेत में गया। अन्नमय्या खेत में घास काट रहा था। तब वह छः वर्ष का था। उसके खेत से सटे दिव्य-क्षेत्र तिरुमला जाने वाला रास्ता था। उस समय उस रास्ते पर कुछ यात्रीलोग तिरुमल जा रहे थे। जाते-जाते वे यात्री भक्ति-पारवश्य में ''गोविंदा! गोविंदा!!'' चिल्ला रहे थे! इस संरंभ पर छः वर्षीय बालक अन्नमय्या आकृष्ट हो गया!

उस नादान बालक ने जाना वे यात्री तिरुमल दिव्य-क्षेत्र जा रहे हैं। माँ अक्सर कहती थी कि वह विष्णुवांश से पैदा हुआ है। और, वह भगवान विष्णु तिरुमल में विराजमान है! क्यों न आप एक बार जाकर उस श्री वेंकटेश रूपी विष्णु भगवान का दर्शन कर ले?!...बस अब क्या था? - छः वर्षीय बालक अन्नमय्या ने हाथ के हसिये को खेत में फेंक, एक दौड़ में जाकर उन यात्रियों की भीड़ में जाकर शामिल हो गया, जो तिरुमल की यात्रा में जा रहे थे!!यात्रियों ने समझा कि अन्नमय्या अपने में किसी का लड़का है। सब लड़कों के साथ उसे भी खाना मिलता रहा और रक्षा भी।

तिरुमल पहाड़ पर अन्नमय्या

उन यात्रियों के संग-संग अन्नमय्या तिरुमल दिव्यक्षेत्र पहुँच गया। वह आयतन की धर्मशाला में खाता था और सोता था। दिन में स्नानादियों से निवृत्त होकर तिरुमल माड़ावीथियों में भगवान श्री बालाजी की महिमा के वैभव का गायन करते हुए फिरता था।

एक दिन वह आनंदनिलय के चबूतरे पर बैठ कर श्री वेंकटेश का यश-गान करने लगा, तो मंदिर के पुजारियों की दृष्टि आकृष्ट किया! पुजारियों ने यह जान कर संतुष्ट हुए कि अन्नमय्या जात का ब्राह्मण है, ऊपर से श्रीवैष्णव भी, तो बच्चे का लालन-पालन का भार-वहन किया। वह तिरुमल-बालाजी की वेद-पाठशाला में षड़ंग वेद-पठन किया और संपन्न वेद-शास्त्री बना।

मंदिर के पुजारियों ने ही अन्नमय्या के तिरुमलगिरि पर होने का वृत्तांत उसके माता-पितरों को ताल्लपाका में आदमी भेज कर पहुँचाया, तो वे लोग तिरुमल आधमके और अपने बेटे को गाँव ले चले। तब तक अन्नमय्या नौ जवान लड़का बन चुका था। गाँव में उसकी शादी की गयी थी। अन्नमय्या के दो बीवियाँ थीं!

अन्नमाचार्य की पद-रचना

बाल्यकाल में ही श्री वेंकटेश भगवान ने अपने भक्त अन्नमय्या को अपने सन्निधान तिरुमलगिरि पर बुला लिया, इस कारण कि वह अपना आयुध ''नंदक'' नामक खड्ग था।

श्रीवैष्णव-संप्रदाय में यह परिपाटि रही है कि इस धरातल पर धरम की हानि होने पर, जब-जब श्रीमन्महाविष्णु अवतरित हो आये, तो श्रीदेवी, भूदेवी, गरुड़, वैजयंती, नंदक, सुदर्शन चक्र, दक्षिणावर्त्त शंख, कौमोदकी गदा आदि श्रीस्वामी से संबन्धित समस्त परिचारक, आयुधादि उनके साथ अवतरित हो आते थे!! वे सब व्यक्ति विशेष श्रीहरि के साथ धर्म के संस्थापन में हाथ बँटाते थे!

अब अन्नमय्या नंदक नामक श्रीमन्महाविष्णु का खड्ग जो था! अन्नमय्या-रूपी नंदक नामक खड्ग ने अपनी पारी के अनुसार श्रीस्वामी की महिमा के वैभव का गायन करना शुरू किया था।

अन्नमय्या तिरुमल श्री वेंकटेश भगवान के याजमान्य के जरिये मंदिर के आस्थान का विद्वांस नियुक्त कर दिया गया था। अन्नमय्या ने तिरुमल के भगवान बालाजी के

रंग, रूप, अवतार, बल, शक्ति, पूजा, महिमा, वैभव आदि अवतारपूर्ण गुण, स्वभावों का अपने पदों में विस्तारपूर्ण वर्णन किया था।

अन्नमय्या ने अपने जीवित काल में कुल ३२ हजार पदों का प्रणयन किया था, लेकिन आज उनमें से काफी पद अलभ्य हैं!!!

अन्नमाचार्य के पदों की बुनियादी भाव

अन्नमय्या के पद सख्त श्रीवैष्णव धर्म के प्रतीक माने जाते हैं। ''वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीर पराये जाणे, रे!'' - एक गुजराती गीत। अर्थात्, वैष्णव वह कहलाता है, जो पराये लोगों का दुःख जानता हो! श्रीमन्महाविष्णु ने अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के दुःख-हरण-हेतु अपने समस्त परिवार के साथ अपना तन-मन जुटाके परिश्रम किया था। अतएव विष्णु भगवान के भक्त व अनुयायी ''वैष्णव'' कहलाये, जो दूसरों के दुःख-हरण-हेतु जतन करते हैं!! अन्नमय्या सख्त श्रीवैष्णव था।

अन्नमय्या से करीब ४०० साल पहले तिरुमल श्री वेंकटेश्वर के मंदिर में भगवान श्रीमद्रामानुजस्वामी यतिराज ने वैष्णव धर्म के आचारों के पालन पोषण किया हुआ था। ११वीं शती से श्री वेंकटेश भगवान वैष्णव धर्माचरण का स्थापन बन कर पूजा-अर्चना ले रहा है।

ग्यारह वीं शताब्दी के भगवद्रामानुजाचार्य ने ''विशिष्टाद्वैत'' सिद्धान्त का परिपोषण किया था। अद्वैत-सिद्धान्त के मूलकर्त्ता आदिशंकर भगवत्पादमहराज के अनंतर भगवद्रामानुज एक ऐसी शक्तिवान है, जिसने हिन्दू-विचार-धारा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया था!! भगवद्रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्तों की बुनियाद पर ही अन्नमाचार्य की पद-रचना स्थित है!

अन्नमाचार्य के पदों का दर्शन

'ब्रह्म सत्यम्-जगन्मिथ्या।' इस भाव की परिपुष्टि में अन्नमय्या लिखता है-

दिन-दिन का जीवन नाटक है
जतन के उपरांत पायी जाने वाली मुक्ति है।।

यहाँ तिरुमल-मुक्तिधाम पर बसे भगवान बालाजी ही राम है; रवि-कुलज है; यही भूमिजा के पति है!

राम है, राघव है - यही रघुकुलज है
भूमिजा के पति, जो पुरुष-रूपी निधान है।।

अन्नमाचार्य ने सभी मंत्रों (कार्यों) का भगवान श्री वेंकटेश में ही दरसा था। अन्नमय्या ने फरमाया था कि दसों अवतारों का वरण बालाजी ने ही किया था!

सभी मंत्र यहीं आवहित (होकर) हैं
मक्खन खाने के वय से मुझे वेंकट का मंत्र मिला।।
नारद ने जपा नारायण-मंतर
पहुँचा प्रह्लाद नारसिंह-मंत्र में
चाह कर विभीषण राम-मंत्र में गया।
मुझे तो मिल गया वेंकटेश का मंत्र।।

भगवान श्री वेंकटेश ही अन्नमाचार्य के श्रीहरि है। हर हमेशा उसके समीप बस कर रक्षा करने वाला श्रीराम है। अन्नमय्या कहता है कि उसका गोविंद-कुल है! उसके तिरुपति के श्री गोविन्दराजस्वामी इस प्रकार की शयन-मुद्रा में विराजमान है, जिसे देखते-देखते वटपत्रशायी का भव्य-रूप याद हो आता है! अन्नमाचार्य ने सप्तगिरीश वेंकटरमणस्वामी की देवेरी अलमेलुमंगा माता को अपनी माता मान कर, देवी माँ को सुंदर वर्णन से सजाया है-

१. अलमेल्मंगा! तेरा अभिनव रूप
जलजाक्ष हरि की आँखों की रोशनी है।।

२. क्या करके हे तुझे सराहें
बसंती सुंदरता की अलमेल्मंगा।।

३. खेली रे देखो बालों में सजे फूल झड़ते
बलखाती सुन्दर अलमेल्मंगा।।

अपने आराध्य के परिचारक भी उपासक को पूज्य लगने लगते हैं। श्रीराम के संसेवक हनुमान अन्नमाचार्य को अत्यंत प्रीति-प्रदाता लगता है। अपने भक्त की सहूलियत के लिए राम ने समुंदर को शोषित बनाया, तो हनुमान ने बिना जल के सागर का यों ही लाँघा था! राम ने बड़े क्रोध से रावण का वध किया तो हनुमान महाशूर ने मैरावण को दंडित बनाया!!

उपसंहार

भगवद्रामानुज ने शेषाचल पर भगवान श्री वेंकटेश्वर का निरूपण किया, तो उसके चार सौ साल के उपरांत कारण जन्मी अन्नमाचार्य ने श्रीरामानुज के दरसाये संकेतों के इशारे पर सप्तगिरीश श्री वेंकटेश में दशावतार-दर्शन कराते हुए उसका विश्वरूप संदर्शन कराया! रामानुजी और अन्नमाचार्यजी एक दूसरे के अंश मात्र हैं। एक आदिशेष है, तो दूसरा श्रीस्वामी का नंदक-खड्ग है।

अन्नमाचार्य ने अपने पदों के विराट्-सिंघासन पर भगवान बालाजी को आसीन कर, स्वरार्चना करने वाले साक्षर-अक्षर सरस्वती है, वरना अन्यों में वह भाव-विभोरता, अभिव्यंजन सामर्थ्य और निष्कपटता दुर्लभ है!!

वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेश समोदेवो न भूतो न भविष्यति।

जिस परब्रह्म की चरण धूलि से समस्त पापों का हरण होता है, जिस भगवान के दर्शन मात्र से समस्त अपराध माफ किए जाते हैं, जिस ईश्वर की शरण में जाने से अनन्य शरण प्राप्त होती है, वे स्वामी भक्त वत्सल, शरणागत वत्सल, भक्तों की आपदाओं को दूर करने केलिए ही अवतरित स्वामी श्री वेंकटेश्वर है। परब्रह्म श्री महाविष्णु के अनेक प्रकार के अवतार हुए हैं, दुष्टों के संहार हेतु तथा शिष्टों की रक्षा हेतु स्वामी ने अवतार लिए हैं, लेकिन सिर्फ भक्तों के कामितार्थ श्री वेंकटेश्वरवतार लिए हैं, इसके लिए शेषाचल पर्वत श्रेणियों में प्रसिद्ध वराह क्षेत्र को चुना है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी को वेंकटाद्रि पर्वत पसंद है। भारतीयों को स्वामी का निवास स्थल वेंकटाद्रि पसंद है। इसलिए ही भारत भर के भक्त सभी अपने जीवन काल में कम से कम एक बार तिरुपति-तिरुमल की यात्रा करते हैं और अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

उक्ति, इसलिए चरितार्थ है कि वेंकटाद्रि जैसे पहाड पूरे ब्रह्मांड में और दूसरी जगह हो ही नहीं सकते हैं। प्रकृति की सुंदर गोद में स्थित इन पर्वतों के दर्शन मात्र से ही समस्त पापों का हरण हो जाता है। श्री वेंकटेश्वर जैसे कृपावत्सल स्वामी इस पूरे संसार में और कोई दूसरे नहीं है। इस का स्पष्ट प्रमाण यही है कि स्वामी का अवतार सिर्फ भक्त जनों के उद्धार के लिए ही हुआ है।

इसी महदाकर्षण में पड कर ही भक्तिन श्री तरिगोंडा वेंगमांबा भी स्वामी के साथ बसने के लिए आयी और स्वामी में लीलैक्य हुई है। वेंकटाचल क्षेत्र में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सेवा में अनेक राजाओं,

तिरुमल में अन्नप्रसाद

- डॉ.बी.के.माधवी
मोबाइल - ६२८७८९४२०८

कवियों, कीर्तन कार आदि पुनीत हुए हैं। लेकिन तरिगोंडा वेंगमांबा की अपनी प्रत्येकता है। उन्होंने स्वामी की सेवा के साथ-साथ एक कवयित्री भी है और भक्तजनों की भी सेवा की है।

कई दानों में अन्नदान की अपनी प्रत्येकता है। विशिष्टता भी है। कवयित्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने तिरुमल में स्वामी के दर्शन करने आनेवालों को अपने कुटीर में स्वयं खाना बनाकर उनकी भूख मिटाती थी।

यही परंपरा तिरुमल में आज तक चल रहा है। जहाँ वेंगमांबा तिरुमल यात्रियों को खाना बनाकर भूख मिटाती रहीं आज उसी जगह तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने 'तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद केंद्र' (क्षेत्र) के नाम पर यात्रियों को सुबह दस बजे से लेकर रात तक अन्न प्रसाद का वितरण कर रही है। जो आज तक भारत में ऐसे अन्नदान का कार्यक्रम कही नहीं है। भक्तजनों की सेवा में अन्नदान भी एक है। 'अन्नं परब्रह्म स्वरूप है।'

सब लोग दर्शन के बाद तरिगोंडा वेंगमाबा अन्नप्रसाद केंद्र में आकर खाना खाते हैं।

पहले भोजन की तैयारी होने के बाद वहाँ स्थित अन्नपूर्णा देवी के आगे प्रसाद नैवेद्य चढ़ाकर प्रार्थना करने के बाद सबको खाना परोसते हैं। यात्रीगण भोजन प्रसाद स्वीकार करने के पहले गोविंद नाम का स्मरण करवाते हैं बाद में अन्नं परब्रह्म का श्लोक पढाते हैं। विश्व भर में इस प्रकार अन्नदान करनेवाली संस्था तिरुमल तिरुपति देवस्थान एक ही है। इस प्रकार की संस्था कहीं भी नहीं है। भक्त जन भी अन्नदान को भगवान के प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हैं।

नीति पद्यम्

2

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

आभिजात्यमुनने आयुवुन्नंतकु
दिरुगु चुंद्रु भ्रमल देलियलेक।
मुरिकि भाण्डमुननु मुसरु नीगल रीति।
विश्वदाभि राम विनुर वेमा ॥२॥

मूर्ख लोग मरण-पर्यंत अपनी उच्चकुलीनता का ढिंढोरा पीटते हुये भ्रम में पड़कर, व्यर्थ जीवन गँवाते हैं। ऐहिक विषयों में लिप्त उनकी दशा उन मक्खियों की सी है, जो कूड़ा-करकट से भरे घड़े की चारों ओर भिनभिनाती रहती हैं, और नाक सड़ाने वाली उसकी-दुर्गंधि की अहितकारिता समझने से रह जाती हैं।

शक्ति का महापर्व नवरात्र व विजयदशमी

- श्रीमती रमन त्रिपाठी
मोबाइल - ९२३५५११०८३

अपना भारतवर्ष मूलतः पर्व-त्योहारों का देश है। यह आध्यात्मिक देश है। अध्यात्म भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। संपूर्ण विश्व में भारत-भू ही एक ऐसी पुण्यभूमि है, जहाँ देवताओं, देवियों, मुनियों, ऋषियों एवं तपस्वियों के साथ-साथ पर्वतों, नदियों, वृक्षों एवं पशु-पक्षियों को भी ईश्वर तुल्य मान पूजा जाता है। शक्ति इस सृष्टि का आधार है। इसके द्वारा ही चराचर जगत् जीवंत और प्राणवान् है। शक्ति ही सबकी पालनहार है। यह शक्ति ही सृष्टि के कण-कण में असंख्य रूपों में विराजमान है। हमारे शरीर, इंद्रियों और मन का संचालन भी शक्ति द्वारा ही होता है। जल, वायु तथा अग्नि की समस्त क्रियाओं में शक्ति ही समाहित है। ब्रह्म में सत, चित् और आनंद आदि जो गुण हैं, उनका मूल स्रोत भी शक्ति ही है। जगत् की समस्त क्रियाशीलता का श्रेय शक्ति को ही जाता है। जानने, समझने, सुनने, स्पर्श करने आदि की सारी क्रियाएँ इस शक्ति के कारण ही हैं। इस शक्ति के बिना ही शिव शव बन जाते हैं। इसी शक्ति को 'आद्या शक्ति' अथवा 'महाविद्या' भी कहा जाता है। आदिशक्ति, आदिमाया, पराशक्ति, महामाया, कुंडलिनी आदि नामों से विख्यात यह शक्ति आखिर है कौन?

श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के पाँचवें स्कंद में देवी शक्ति का विस्तृत वर्णन है कि दैत्य महिषासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने इच्छित वरदान माँगन को कहा। महिषासुर ने अमरत्व माँग लिया। तब ब्रह्माजी ने उसे प्यार से समझाया कि - महिषासुर! इस सृष्टि में जनमें प्राणी की मृत्यु अवश्य होती है और यह क्रम निरंतर अबाध चलता रहता है। अगर अमरत्व को छोड़कर कोई दूसरा वर माँग लो। तब महिषासुर बोला, 'पितामह! फिर तो मुझे इच्छित रूप धारण करने का वर दो। देवता, दैत्य, गंधर्व यहाँ तक कि मानव-इनमें से किसी के हाथों मेरी मृत्यु न हो और मेरी मृत्यु हो भी तो ऐसी कन्या के हाथों हो, जो कुँवारी हो तथा जिसका जन्म किसी के गर्भ से न हुआ हो।' ब्रह्माजी ने महिषासुर को इच्छित वर दे दिया।

वर प्राप्त करते ही महिषासुर घोर अभिमानी हो गया। उसने समस्त प्राणियों को अपने अधीन कर लिया। अपने बाहुबल से समस्त पृथ्वी को जीत लिया। इतना ही नहीं, उसने

स्वर्ग में जाकर इंद्र को चुनौती दी। देव-असुर युद्ध छिड़ गया और उसने सभी देवताओं का मान-मर्दन कर दिया। आखिर भगवान शिव और विष्णु भी उस दैत्य का कुछ न बिगाड़ सके। त्रिदेव तो अपने-अपने लोक को चले गए और इंद्रादि देवता वन-कंदराओं में जाकर छिप गए। कुछ काल के पश्चात् सब देवों ने भगवान विष्णु से गुहार लगाई। संकट की विकट घड़ी को देख कर विष्णुजी की भैंहें तन गईं और मुख टेढ़ा हो गया। अत्यंत क्रोधावेश में भरे विष्णु के मुख से एक महान् तेज प्रकट हुआ। इसी तरह से ब्रह्म, शिव, इंद्र आदि देवताओं के शरीर से भी प्रबल तेज निकला। ये सब तेज मिल कर एकाकार हो गए। तेजपुंज की आकाश को छूती तथा संपूर्ण दिशाओं में व्याप्त लपटें एक कन्या रूप से बदल गईं, और फिर यह तीव्र प्रकाश तीनों लोकों को आलोकित करने लगा। भगवान रुद्र के तेज से उस देवीशक्ति का मुख प्रकट हुआ, यमराज के तेज से उसके सिर में बाल निकल आए। श्रीविष्णु के तेज से उसकी भुजाएँ, चंद्रमा के तेज से दोनों स्तन तथा इंद्र के तेज से कटि, वरुण के तेज से जंघाएँ व पिंडलियाँ, पृथ्वी के तेज से नितंब, ब्रह्म के तेज से दोनों चरण, सूर्य के तेज से पैर की उँगलियाँ, वसुओं के तेज से हाथों की उँगलियाँ, कुबेर के तेज से नासिका, प्रजापति के तेज से दाँत, अग्नि के तेज से उसके त्रिनेत्र, संध्यादेवी के तेज से भौंहें, वायु के तेज से कान उत्पन्न हो गए। इसी तरह अन्य देवताओं के तेज से कल्याणमयी देवीशक्ति साकार हुई।

इस तरह महातेजस्वी देवीशक्ति को देखकर देवता अति प्रसन्न हुए। उन्हें संपूर्ण समर्थ बनाने के लिए भगवान शंकर ने अपने त्रिशूल में से एक त्रिशूल भेंट किया। भगवान विष्णु ने चक्र, वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, वायु ने धनुष तथा बाणों से भरे हुए दो तरकश, देवराज इंद्र ने वज्र, ऐरावत हाथी ने एक घंटा, यमराज ने कालदंड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिक की माला,

ब्रह्माजी ने कमंडलु, सूर्यदेव ने देवीशक्ति के समस्त रोम-कूपों को अपनी किरणों के तेज से भरा, काल ने चमचमाती तलवार और ढाल दी। क्षीर सागर ने उज्ज्वल हार तथा कभी न क्षय होनेवाले वस्त्र के अलावा दिव्य चूड़ामणि, दो कुंडल, अर्धचंद्र, सब भुजाओं के लिए कंगन, चरणों के लिए घुघरू, गले के लिए सुंदर हँसली और उँगलियों के लिए रत्नजड़ित अंगूठियाँ भेंट की। विश्वकर्मा ने उन्हें धारदार फरसा तथा अभेद्य कवच दिया। सागर ने कमल का पुष्प तथा हिमालय ने सवारी के लिए सिंह, कुबेर ने मधु से भरा पात्र, शेषनाग ने उन्हें अनमोल मणियों से विभूषित नागहार तथा अन्य देवताओं ने कुछ-न-कुछ भेंट कर उन्हें और भी शक्तिवान बनाया है।

ऐसी देवीशक्ति ने उच्च स्वर में सिंहनाद किया, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड में हलचल मच गई। इसके साथ ही उनका दैत्यों से युद्ध छिड़ गया। महिषासुर का सेनापति तथा प्रमुख योद्धा दैत्य मारे गए। मायावी महिषासुर नाना रूप बदलने लगा, लेकिन महादेवी ने प्रपंची महादैत्य का सिर काट डाला। दैत्यों की बाकी सेना भाग खड़ी हुई। देवताओं ने हर्षित होकर महादेवी शक्ति यानी देवी दुर्गा का पूजन किया।

पौराणिक वाङ्मय में जगज्जननी की बड़ी महिमा गाई गई है। महाभारत ग्रंथ के 'भगवद्गीता' भाग में शक्ति तत्त्व का विशद वर्णन है। 'मार्कण्डेय पुराण' में शक्ति तत्त्व, तांत्रिक ग्रंथों में शक्ति देवी का पर्याप्त वर्णन है। 'मार्कंडेय पुराण' में ही 'दुर्गासप्तसती' है, जिसका नवरात्र, होम यज्ञादि में पारायण किया जाता है। 'अग्नि पुराण' में तंत्र के अंतर्गत शक्ति देवी का पूजा-विधान बताया गया है। 'कालिका पुराण' तो देवीशक्ति का अपने आप में एक स्वतंत्र पुराण ही है। 'ब्रह्मांड पुराण' के द्वितीय भाग में 'ललिता सहस्रनाम' पूरा प्रकरण ही देवीशक्ति पर है। 'कूर्म पुराण' में परमेश्वरी देवीशक्ति के आठ हजार

नामों का वर्णन है। 'वाराह' व 'पद्म पुराण' के चारों युगों में तंत्र का ही उल्लेख है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में भगवान कृष्ण ने शक्तिदेवी को ही जननीभूत ईश्वरी तथा मंगलों का भी मंगल करने वाली बताया है। 'कूर्म पुराण' में देवीतत्त्व की व्याख्यावों की गई है 'वह देवी ही एकमेक, अद्वितीय, सर्वव्यापी, सूक्ष्म, अचल तथा नित्य स्वरूप है।' 'शिवपुराण' में महादेव शंकर संसारव्यापी पुलिंगता को तथा देवप्रिया स्त्रीलिंगता को धारण करनेवाली बताई गई हैं और तभी शिव अर्धनारीश्वर हैं। 'गरुड पुराण' में देवीशक्ति की महत्ता तथा तांत्रिक विधि-विधान बताए गए हैं। भगवती देवीशक्ति के महत्त्व को सब पुराणों में श्रद्धा के साथ स्वीकार किया गया है। इन्हीं शक्तिदेवी के नौ स्वरूपों की वर्ष में दो बार नौ दिनों तक पूजा उपासना की जाती है। पहले वर्षप्रतिपदा पर चैत्र मास में तथा दूसरे आश्विन मास में, जिन्हें 'शारदीय नवरात्र' भी कहा जाता है।

पहला नवरात्र : प्रथम दिन यानी पहले नवरात्र को देवीशक्ति 'शैलपुत्री' के रूप में पूजी जाती हैं। यही भगवान शंकर की अर्धांगिनी बनीं। नवदुर्गाओं में ये प्रथम दुर्गा हैं। ये मनोवांछित सिद्धि देनेवाली हैं।

दूसरा नवरात्र : माँ शक्ति का दूसरा स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' का है। दूसरे नवरात्र को इन्हीं की उपासना की जाती है। कठोर तपस्या की चारिणी होने के कारण इन्हें ब्रह्मचारिणी कहा जाता है। इनकी उपासना से त्याग, वैराग्य एवं असीम धैर्य की प्राप्ति होती है। इन्हें ज्ञान का भंडार माना जाता है और ये सर्वत्र विजय दिलाने वाली हैं।

तीसरा नवरात्र : तीसरे नवरात्र में माँ शक्ति के 'चंद्रघंटा' स्वरूप की पूजा होती है। इनके आराधक को भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है। कांचीपुरम् (कर्नाटक) में ये माता कामाक्षी देवी के रूप में पूजी जाती हैं।

चौथा नवरात्र : चौथे नवरात्र को 'माता कूष्मांडा' की आराधना की जाती है। इनकी भक्ति एवं तेज से समस्त दिशाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

पाँचवाँ नवरात्र : पाँचवें नवरात्र को शक्तिदेवी के पाँचवें स्वरूप 'स्कंदमाता' की पूजा-उपासना की जाती है। ये भक्तों की समस्त इच्छाएँ पूर्ण करनेवाली तथा मोक्ष का द्वार खोलनेवाली हैं। इनकी कृपा से मूढ़मति भी ज्ञानवान हो जाता है। ये चेतना का निर्माण करने वाली माता हैं।

छठा नवरात्र : भगवती शक्ति का छठा रूप 'कात्यायिनी' का ये माता अमोघ फल देने वाली हैं। ब्रजमंडल में ये अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। भगवान कृष्ण को पति रूप में प्राप्त करने के लिए ब्रज की गोपियों ने कालिंदी के तट पर इन्हीं माता की पूजा-अर्चना की थी। ये जन्म-जन्मांतर के पापों को विनष्ट करनेवाली हैं।

सातवाँ नवरात्र : सातवें नवरात्र को माँ शक्ति के 'कालरात्रि' स्वरूप की अभ्यर्थना की जाती है। इनकी कृपा से समस्त पाप-विघ्नों का नाश हो जाता है। इनका भक्त पूर्णतः भयमुक्त हो जाता है और ये शुभंकरी देवी भी हैं।

आठवाँ नवरात्र : माँ शक्ति का आठवाँ स्वरूप महागौरी का है। महाष्टमी को इन्हीं की पूजा उपासना की जाती है। इनकी उपासना अमोघ तथा सद्यः फलदायी है,

भक्तों का सर्वविध कल्याण होता है तथा अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। पुराणों में इनकी बड़ी महिमा गाई गई है।

नौवाँ नवरात्र : माँ शक्ति का नौवाँ स्वरूप 'सिद्धिदात्री' के नाम से विख्यात है। नवरात्र के अंतिम दिन इनकी पूजा-उपासना का विधान है। 'देवीपुराण' के अनुसार भगवान शिव ने इन्हीं की कृपा से सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। ये समस्त सिद्धियों को देनेवाली हैं। इनकी कृपा के फलस्वरूप संसार में कुछ भी प्राप्त करना संभव हो जाता है। इन नवरात्रों में देवी शक्ति की उपासना करने से आध्यात्मिक शक्ति एवं शांति की प्राप्ति होती है। मनुष्य के अंदर के छल, कपट, क्रोध, दुर्विचार, ईर्ष्या-द्वेष आदि भावों का नाश हो जाता है। देवीशक्ति अनन्य कृपा करनेवाली हैं।

विजयदशमी : भगवान राम ने शक्तिदेवी की कृपा प्राप्त कर महापराक्रमी रावण का वध किया। इसी के उपलक्ष्य में नवरात्र के बाद दसवें दिन रावण के पुतले जलाए जाते हैं। दशहरा पर्व बुराई पर अच्छाई का, असत्य पर सत्य का, दुष्टता पर शिष्टता की विजय का प्रतीक है। अंततः सत्य की ही विजय होती है। उत्तर भारत में तो क्या नगर, क्या गाँव, नौ दिनों तक भगवान राम की लीलाओं का मंचन होता है। महानगरों में तो बड़े ही भव्य-दिव्य रूप में रामलीलाओं के विशाल आयोजन होते हैं। यहाँ तो दशहरा की शान निराली होती है। जैसे बंगाल आदि में दुर्गा-विसर्जन का जुनून देखा जाता है, उसी प्रकार दिल्ली और उत्तर भारत में रावण-कुंभकर्ण के पुतला दहन के दर्शनार्थ लाखों लोग उमड़ पड़ते हैं।

देवी-पूजा के नाना रूप : देश के कोने-कोने में देवीशक्ति की उपासना किसी-न-किसी रूप में अवश्य की जाती है। बंगाल, बिहार, उड़ीशा यहाँ तक कि बँगलादेश में 'दुर्गापूजा' का पर्व धूम-धाम से मनाया जाता है। गरीब की झोंपड़ी से लेकर आलीशान और धनाढ्य कोठियों में 'माता की चौकी' सजाई जाती है। महानगरों में तो बड़े-बड़े भव्य पंडालों में दिपदिप और जगमग रोशनी के बीच माँ दुर्गा की झाँकियाँ सजाई जाती हैं। नौ दिन तक श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना कर आरती उतारी जाती है। हजारों लाखों भक्त जन यहाँ आकर माँ दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यहाँ गाँव-गाँव में दुर्गापूजा के सामूहिक आयोजन होते हैं। चहुँओर माँ की कृपा बरसती प्रतीत होती है।

इधर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों में नवरात्र धूम-धाम से मनाए जाते हैं। प्रतिदिन भगवती दुर्गा की पूजा-उपासना होती है। नवरात्र के नौवें दिन समापन पर माँ शक्ति की प्रतीक कन्याओं को जमाया जाता है, उनकी पूजा की जाती है, तत्पश्चात् उपवास तोड़ा जाता है। कुछ भक्त जन पहले और आखिरी नवरात्र को उपवास रखते हैं, कुछ पूरे नौ दिन का उपवास रख माँ दुर्गा की आराधना करते हैं। माँ के कुछ भक्त ऐसे भी हैं, जो निर्जला उपवास रखकर माँ शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। गरीब से गरीब गृहस्थ भी कन्या को भोजन कराकर माँ की अनुकंपा पाने का आकांक्षी रहता है। इन दिनों रात्रि में माता के विशाल जागरण और भंडारे आयोजित होते हैं। नौ दिनों तक पूरा वातावरण आध्यात्मिक आनंद से सरोबार हो जाता है।

विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में शक्तिपीठों की संख्या ५१, ५२ तथा १०८ तक बताई गई है। ये शक्तिपीठ देश-विदेश यानी सर्वत्र फैले हुए हैं। जहाँ हिंगलाज माता (कोट्टरी शक्तिपीठ) कराची, पाकिस्तान में विराजमान हैं, वहीं सुनंदा माता बँगलादेश में पूजित हैं। पहलगाम (कश्मीर) में महामाया शक्तिपीठ है तो हिमाचल प्रदेश में ज्वालामाई, चिंतपूर्णी, काँगड़ामाई, नगरकोटि माता पूजित हैं। जम्मू में माता वैष्णो साक्षात् विराजमान हैं। कलकत्ता में कालिका माई हैं तो पुरी (उड़ीशा) में विमला देवी पूजी जाती हैं। असम में कामाख्या देवी हैं, तो नेपाल में गंडकी चंडी माता तथा त्रिपुरा में त्रिपुरसुंदरी माता विराजमान हैं। प्रयाग में ललिता माता का वैभव फैला है तो पुष्कर में गायत्री माता पूजी जा रही हैं। यही शक्ति तमिलनाडु में नारायणी देवी हैं तो शैलश्री में श्रीसुंदरी देवी हैं। प्रभास क्षेत्र में चंद्रभागा माता हैं तो मिथिला में उमा देवी पूजित हैं। वक्रेश्वर में महिषमर्दिनी माता भक्तों का कल्याण कर रही हैं।

देवीजी के मेले : माँ की चेतन-शक्ति अव्यक्त रूप में सर्वत्र निवास करती है। यही माँ नंदिनी देवी, यशोरेश्वरी, जयदुर्गा, कुमारी, विश्वेश्वरी, भ्रामरी, अवंति, वाराही, शिवानी, सावित्री, मनसा, नैना देवी, मुक्तकेशी, महाबाला, भद्रकाली, नारायणी, कालरात्रि आदि नाना रूपों में पूजी जाती हैं। यही माता कहीं विंध्यवासिनी हैं तो कहीं माहामाया हैं, तो कहीं योगमाया के रूप में पूजित हैं। कोई नगर, शहर या गाँव ऐसा नहीं, जहाँ देवीशक्ति माता के रूप में न पूजी जाती हों। देश भर में जगह-जगह मान्यता के अनुसार माता के मेले और जातरा लगती हैं, जैसे शीतला माता (गुड़गाँव) की जात, नगरकोटि वाली माता की जात, ज्वालामाई की जात। माता वैष्णो देवी के दर्शनार्थ तो वर्ष भर तीर्थयात्रियों का ताँता लगा रहता है।

'मत्स्यपुराण' में धर्मकामार्थ के तेरहवें अध्याय में इसकी चर्चा है कि यज्ञविध्वंस एवं देवीश्राप से मुक्ति के लिए दक्ष प्रजापति द्वारा विनती किए जाने पर देवीशक्ति ने कहा, 'आने वाले समय में मैं १०८ नामों से प्रसिद्ध पीठों में अवतरित होऊँगी। तब मेरे किसी भी पीठ के दर्शन एवं नाम-श्रवण मात्र से व्यक्ति अपने पापों से मुक्त हो जाएगा। उन्हीं शक्तिपीठों में प्रमुख हिमालय भाग में मैं नंदा, कालज्जरगिरी पर्वत पर काली, हिमगिरि पर भीमा, विनायक तीर्थ में उमा तथा बदरीवन में उर्वशी नाम से उपस्थित होऊँगी।'

शक्तिदेवी की महिमा वर्णनातीत है। त्रेतायुग में भगवान राम, देवी शक्ति की पूजा-उपासना कर रावण का वध कर पाए। द्वापर में महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को शक्ति-स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी, तत्पश्चात् पांडव युद्ध में विजयी हुए। जहाँ आदि शंकराचार्य, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी ने भी भगवती देवी की पूजा की, वहीं स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने काली माता की उपासना करके आत्मदर्शन किए। अतः भारतीय दर्शन में शक्ति का स्वरूप बडा ही दिव्य और उदात्त है। शक्ति ही विश्व का सृजन, संचालन और संहार करती है। वही लक्ष्मी रूपा है तो सरस्वती-रूपा भी। शक्ति ही सृष्टि का आदि कारण है। शक्ति ही परम तत्त्व है। आध्यात्मिक शक्ति अर्जित करने के लिए नवरात्र सबसे उपयुक्त समय है।

श्रीवेंकटाचलाधीशं श्रियाद्यासितवक्षसम्।
श्रितचेतनमंदारां श्रीनिवास महं भजे।।

भगवान विष्णु ने ही सीधे वैकुण्ठ से निकल कर इस कलियुग में तिरुमल के सप्तगिरि पर्वत पर श्री वेंकटेश्वर स्वामी के नाम से स्वयंभू रूप में अवतरित हुए हैं। कलियुग वरद भगवान श्री बालाजी वेंकटाद्री पर आश्रित भक्तजनों की कामनाएँ पूरा करने के कारण 'कलौ वेंकटनायक' की उपाधि दिया गया। भगवान बालाजी की विशिष्टता, दिव्य वैभव आदि के बारे में वराह, पद्म, गरुड, भविष्यत पुराण तथा वेद एवं शास्त्रों में अनेक वर्णन मिलते हैं, इसके अलावा स्कंद, ब्रह्माण्ड एवं वामन पुराणों में भी उल्लेख किया गया है।

वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किंचन
वेंकटेश समोदेवो न भूतो न भविष्यती।।''

अर्थात वेंकटाचल जैसा पवित्र पुण्य क्षेत्र इस ब्रह्माण्ड में और कोई नहीं है, वेंकटेश्वर जैसा भगवान इसके पूर्व नहीं था और भविष्य में भी नहीं होगा।

वेंकटाचल पर्वत

भगवान बालाजी इस युग में जिस वेंकटाचल पर्वत पर स्थित है, वह पर्वत इस युग का नहीं है युग युगों का है, प्रत्येक युग में प्रत्येक नाम से यह पर्वत विख्यात है -

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यन्ति, त्रेतायां अंजनाचलम्।
द्वापरे शेषशैलेति कलौ श्री वेंकटाचलम्।

(श्री भविष्योत्तर पुराण-१-३६)

कृतयुग में वृषभाचल, त्रेतायुग में अंजनाचल, द्वापरयुग में शेषशैल और कलियुग में श्रीवेंकटाचल - इस प्रकार हर एक युग में उस पर्वत का विभिन्न नाम बना।

विष्णु से राक्षसों का संहार

देव, मानव जातियों पर राक्षसों के हमलों से बचाने केलिए श्री महाविष्णु ने अवतार धर कर धरती पर आना पडा। विष्णु ने हिरण्यकश्यप, मारीच, रावण, कुंभकर्ण, कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि राक्षसों का वध किया। श्री महाविष्णु उन पराक्रमी वीर योद्धाओं से झूझ कर थक गये। वे अपना थकान मिटाने केलिए परिवार समेत कहीं चले गये।

कलियुग आरंभ में कलि का लोगों पर जबर्दस्त प्रभाव पडा। सज्जनों की जान मुश्किल में पड गयी। धर्म की हानी होने लगी थी। पाप कार्य दिन-ब-दिन बढने लगा। कलि से लोगों की रक्षा करने के लिए ब्रह्म, इन्द्र, यम, वरुण आदि देवता वैकुंठ में विष्णु के पास गये थे। मगर विष्णु भगवान वैकुंठ में न थे। ब्रह्मादि देवता खोये हुए महाविष्णु की तलाश में भूमंडल पर आये और उन्हें अपने परिवार समेत श्री वेंकटाचल पर पाया। ब्रह्म ने विष्णु से कहा कि- धरती पर कलि का अधिकार जम गया है। द्वापर में मरने से बचे राक्षस भूलोक में छिप कर मनुष्यों पर हमला कर, धर्म की हानी कर रहे हैं। यदि द्वापर में बचे इन राक्षसों का वध कर दिया जाय, तो मनुष्यों की बडी रक्षा होगी। विष्णु ने ब्रह्म की अनुरोध को स्वीकार कर अपने सुदर्शन को छोडा। सुदर्शन चक्र प्रचंड गति से जाकर जल, वन-दुर्गों में छुपे दुरात्मा राक्षसों का वध कर वापस अपने स्वामी के पास आ गया।

ब्रह्म के द्वारा आयोजित ब्रह्मोत्सव

लोक रक्षा पर ब्रह्मादि देवता प्रसन्न हुए। सब लोगों ने स्वामी विष्णु भगवान से युग संचालन करने का अनुरोध किया। विष्णु ने उनकी बात मान ली। ब्रह्म ने विश्वकर्मा को आदेश दिया कि स्वामी के निवास स्थान केलिए 'आनंदनिलय' का भव्य रूप से निर्माण करे। विश्वकर्मा ने आनंदनिलय के साथ-साथ मेरु-परबत-सरीखा एक समुन्नत दिव्य रथ का भी निर्माण किया। ब्रह्म ने अपने परम पिता श्री महाविष्णु से निवेदन किया - हे परम पूज्य पिता! आप ने लोक रक्षा-हेतु राक्षसों का संहार किया। अपने चरम आयुध चक्रत्ताल्वार का राक्षसों पर प्रयोग कर कलियुग के समस्त लोकों को निष्कंटक बनाया। मानव लोक को आनंदमय जीवन बिताने का सुअवसर मिला। इस खुशी में हम लोगों का एक नम्र निवेदन आप को स्वीकार करना होगा। आप की इस विजय परंपरा को उत्सव मना कर तृप्त होंगे। इस सिलसिले में हम विजयोत्सव मनाने की आप की अनुमति चाहते हैं।

विष्णु भगवान ने विजयोत्सव मनाने की अनुमति ब्रह्मादि देवताओं को दे दी। विजय का यह उत्सव ब्रह्म के द्वारा आयोजित होने के कारण 'ब्रह्मोत्सव' के नाम से विख्यात हुआ।

कलियुग वैकुण्ठ के रूप में प्रसिद्ध पुण्य क्षेत्र तिरुमल में हमेशा कोई न कोई एक उत्सव और जुलूस से सुशोभित होता रहता है। इन सब का सिरमौर्य साल में एक बार महा वैभव से ब्रह्मोत्सव को मनाया जाता है। जब अधिक मास तीन साल को एक बार आता है, तब दो बार ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। इस में पहला आनेवाला ब्रह्मोत्सव वार्षिक ब्रह्मोत्सव के नाम से, दूसरा ब्रह्मोत्सव को नवरात्री ब्रह्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

ब्रह्मोत्सव में वाहन सेवाएँ

सूरज के कन्याराशि में प्रवेश करने की शुभ मुहूर्त्त में होनेवाले माह में चित्ता नक्षत्र वाले दिन पर ब्रह्मोत्सव का आरंभ होगा। श्री वैखानस आगमशास्त्र के अनुसार नौ दिनों तक चलनेवाले ब्रह्मोत्सव में सबेरे और रात के समय में श्रीहरि विविध वाहनों में विराजमान होकर तिरुमाडावीथियों में घूमते हुए भक्तों को दर्शन देते हैं।

तिरुवीधुला मेरसी देवदेवुडु

गरिमल मिंचिन सिंगारमुल तोडनु

ताल्लपाका अन्नमाचार्य ने ब्रह्मोत्सव में श्रीहरि विविध वाहनों में विराजित होकर जुलूस निकलने का ढंग वर्णन किया है।

ब्रह्मोत्सव में वाहन सेवाएँ इस प्रकार हैं -

पहला दिन-रात-महाशेषवाहन, दूसरे दिन-सबेरे-लघुशेषवाहन, रात-हंसवाहन, तीसरा दिन-सबेरे-सिंहवाहन, रात-मोतीवितानवाहन, चौथा दिन-सबेरे-कल्पवृक्षवाहन, रात-सर्वभूपालवाहन, पाँचवा दिन सबेरे-पालकी, रात-गरुडवाहन, छाठवाँ दिन-सबेरे-हनुमन्तवाहन, रात-गजवाहन, सातवाँ दिन सबेरे-सूर्यप्रभावाहन, रात-चंद्रप्रभावाहन, आठवाँ दिन-सबेरे-रथ यात्रा, रात-अश्ववाहन, नौवाँदिन-चक्रस्नान, ध्वजावरोहण।

कल्पवृक्षवाहन

बहुरूपधारी, ब्रह्मांड नायक श्रीनिवास चौथे दिन उभयदेवेरियों के साथ कल्पवृक्षवाहन में आसीन होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। अमृत केलिए देव और दानव क्षीर

सागर का मंथन करने पर उस क्षीर सागर से उत्पन्न हुई चीजों में से कल्पवृक्षवाहन भी एक है। अपनी मनोकामनाओं की पूर्ती करनेवाला दिव्य वृक्ष ''कल्पवृक्ष'' है। चौथे दिन भक्तजन रक्षक वेंकटेश्वर स्वामी कल्पवृक्ष पर आसीन होकर दर्शन देते हैं।

अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक श्रीनिवास अपने दोनों पत्नियों श्रीदेवी, भूदेवी के साथ चार माडावीथियों में विहार करने के लिए संसिद्ध हुए हैं। स्वामीजी के दर्शन केलिए गजराज भी घीं कार करते हुए जा रहे हैं। दीन बन्धु गोविंदा कल्पवृक्ष के ऊपर आसीन हुए हैं। कल्पवृक्ष को भी अधिपति सप्तगिरीश ही है। भगवान का नाम स्मरण करने मात्र से भक्तों की समस्त इच्छाएँ पूर्ण होती है। पुरुषार्थ को प्रदान करनेवाला श्रीनिवास ही है। कल्पवृक्ष ऐहिक सुख प्रदान करता है तो आध्यात्मिक आनंद मोक्ष को प्रदान करने वाला श्रीनिवास है।

साला, रसाला, इंताला, अशोका, अश्वथामा, वकुला, पूगा आदि वृक्षों का अधिपति वेंकटेश्वर जी है। ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, शक्ति, तेज और धैर्य आदि कल्याण गुणों से युक्त भक्तों को दर्शन देते हुए बालाजी खुद प्रसन्न हैं। स्वामी वैकुंठ को छोडकर कलियुग में वेंकटाचल पर्वत पर हम जैसे भक्तों का उद्धार करने केलिए आनंदनिलय में विराजित हुए हैं।

कल्पवृक्षवाहन में विराजमान बालाजी भगवान के दर्शन करने केलिए विविध प्रांतों से भक्त लोग आते हैं। दोनों हाथों से नमस्कार करने से उस देव देव की दिव्य अनुग्रह को पाते हैं। भक्तों के हृदयों में -

१) अन्नमय्या के बुलावे पर अंकित हुए अखिलांडपति के रूप में,

२) भक्तों के दांडिया हृदयरंजक हैं,

३) आल्वारों के अंतरंग में आनंदपरवश हुए अलिवेलु मंगपति के रूप में,

ऐसे अनाथ, भक्त रक्षक के शरण में जो कोई जाएगा, वह सुख और चैन से रहेगा। आनंदनिलयवासी अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक मोक्ष फल को प्रदान करेंगे। वासुदेव नामक पेड के छत्र छाया में जो रहेगा वह हमेशा सुख से रहेगा। समस्त ताप को दूर करेगा। नरक रूपि कष्टों को दूर करेगा। तिरुमल क्षेत्र की महानता पुराणों में इस प्रकार उल्लेखित है -

नम्माल्वारों से अश्वादित होकर,
मानसयोगियों केलिए आध्यात्मिक क्षेत्र,
राजसयोगियों केलिए दिव्य क्षेत्र,
भक्तों के लिए मुक्ति क्षेत्र,
शोधार्थी केलिए विज्ञान क्षेत्र,

रथसप्तमी के दिन कल्पवृक्षवाहन

कलियुग वैकुण्ठ से प्रसिद्ध तिरुमल में सूर्य भगवान की जयंती रथसप्तमी के दिन विशेष रूप से मनाया जाता है। रथसप्तमी के दिन सूर्योदय से लेकर रात चन्द्रोदय तक सात वाहनों में तिरुमलेश आरूढ होकर भक्तों को नयनानंद प्रदान करते हैं। उस दिन होनेवाले सभी वाहन सेवाओं के जुलूस में सप्तगिरीश विराजमान होते हैं। हर एक वाहन पर उस मलयप्पा का वैभव अत्यंत मनोहर होता है। हर एक वाहन में अलग-अलग अलंकार में दिखाई देनेवाला ब्रह्मांड नायक का दिव्यमंगल रूप अत्यंत अद्भुत होता है।

रथसप्तमी के दिन पाँचवाँ वाहन कल्पवृक्ष है। कलियुग वेंकटेश्वर कल्पवृक्षवाहन पर आरूढ होकर तिरुमाडावीथियों के जुलूस में भक्तों को दर्शन दे रहे हैं। भक्तों केलिए वैकुंठ छोडकर, भक्तों की इच्छाओं की पूर्ती केलिए कलियुग वेंकटेश्वर आनंदनिलय में मूलविराट के रूप में आसीन हुए हैं। इच्छाओं की पूर्ती करनेवाला कल्पवृक्ष को अपना वाहन बनाकर उस पर आसीन हुए देव देव के भव्य रूप सचमुच अद्भुत है। ऐसे हे भक्त शिरोमणि सर्वकाल सर्वावस्था में तुम्हारा नाम स्मरण, तुम्हारा कीर्तन, तुम्हारा भजन, तुम्हारा पादसेवा करने की अनुग्रह करो।

ब्रह्मोत्सव में कल्पवृक्षवाहन पर विराजित देव देव के भव्य रूप का दर्शन करके हम सब तरेंगे।

चित्रकथा

गरुड वाहन

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

गरुडा ने कद्रुवा को अमृत लाकर दिया।
तुम्हें मेरी दासता से मुक्ति मिल गयी।
धन्य हूँ।
इतने में इन्द्र तेज से दौड कर अमृत कलश को कद्रुवा से छीन कर भाग गया।
हाय! मेरा अमृत! मेरा अमृत!
विष्णु भगवान ने गरुत्मंत के सामने प्रत्यक्ष हुए।
गरुडा! तुम्हारी मातृभक्ति से प्रसन्न हुआ। कोई वर माँगो।
स्वामी! नागों को अपना आहार बनने का अनुग्रह कीजिए।
बेटा! और एक वर भी माँगो।
हे परमात्मा! आप का वाहन बनने का कृपा करे।
तथास्तु वैनतेया!
धन्य हूँ स्वामी!
उस दिन से लेकर गरुत्मंत वाहन के रूप में विष्णु की सेवा कर रहा है।
2
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु! स्वस्ति।

‘क्विज’

आयोजक - श्रीमती एन.मनोरमा

१) तिरुमल बालाजी को साल भर में संपन्न सेवाओं में परमोत्कृष्ट उत्सव क्या है?

अ) उट्लोत्सव आ) वसंतोत्सव इ) ब्रह्मोत्सव ई) कोई नहीं

२) परमेश्वर जी को पति के रूप में पाने के लिए कौन तपस्या किया?

अ) कालि आ) गायत्री इ) लक्ष्मी ई) पार्वती

३) अत्रि-अनसूया का पुत्र का नाम क्या है?

अ) दत्तात्रेय आ) प्रह्लाद इ) गणेश ई) कुमारस्वामी

४) शिव-धनुष को कौन तोड़ा है?

अ) बलराम आ) श्रीराम इ) परशुराम ई) रावण

५) ‘कल्पवृक्ष’ कहा से उद्भव हुआ था?

अ) भूगर्भ आ) क्षीरसागर मंथन इ) गंगानदी ई) महायज्ञ

६) कौन-सा दिन श्री पद्मावती देवी उद्भवित हुई?

अ) गरुडपंचमी आ) नागुलपंचमी इ) पंचमीतीर्थ ई) कोई नहीं

७) श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का प्रिय भक्त कौन है?

अ) प्रह्लाद आ) बलि इ) शिबि ई) तोंडमान

जवाब

१) ई २) ई ३) अ ४) आ ५) आ ६) ई ७) अ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

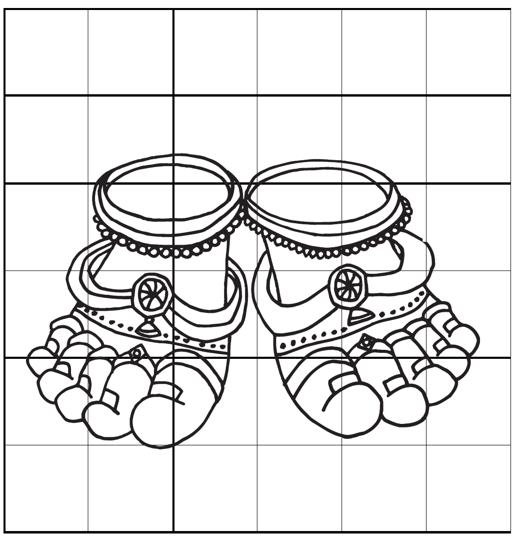

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Published at Tiruapti-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२१ अक्तूबर ०७ से १५ तक

१४-१०-२०२१
गुरुवार
दिन - रथ-यात्रा

१४-१०-२०२१
गुरुवार
रात - अश्ववाहन

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-09-2021 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.